thearyasamaj.org

ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष ६२ अंक ८ अप्रैल २०१५ वैशाख २०७१ वार्षिक मूल्य १५० रु०

जलियांवाला बाग के शहीदों की स्मृति में जारी डाक टिकट

१३-४-१९१९ को जलियांवाला बाग (अमृतसर) में जनरल डायर के द्वारा शान्त और शस्त्रविहीन जनता पर गोलियों की बौछार कराई गई, जिसमें लगभग ४०० व्यक्ति शहीद हुए और लगभग १५०० व्यक्ति घायल हुए थे।

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
व्यवस्थापक : ब्र० राहुल आर्य

thearyasamaj.org

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुन: भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा '**व्यवस्थापक सुधारक**' के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

—व्यवस्थापक

वर्ष :६२ अंक : ८
अप्रैल २०१५ विक्रमाब्द २०७१
दयानन्दाब्द १९० कलिसंवत् ५११५
सृष्टिसंवत्-१,९६,०८,५३,११५

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
१.	आर्याभिविनय	१
२.	सम्पादकीय	२
३.	गाय का अर्थशास्त्र	५
४.	आज महर्षि दयानन्द की आवश्यकता है	७
५.	विश्वशान्ति को औषध	९
६.	एक मन्त्र दो गीत	११
७.	कृण्वन्तो विश्वमार्यम्....	१२
८.	गुरुकुल आश्रम आमसेना....	१५
९.	राष्ट्रगीत और वन्देमातरम्....	१६
१०.	सेना में जाति-आधारित....	२०
११.	जलियाँवाला बाग का हत्याकाण्ड....	२३

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

thearyasamaj.org

आर्याभिविनयः

प्रार्थना - विषय

वि जानीह्यार्यान् ये च दस्यवो
बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान्।
शाकी भव यजमानस्य चोदिता
विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन॥ १४॥

ऋ० १।४।१०।३॥

व्याख्यान—हे यथायोग्य सबको जाननेवाले ईश्वर! आप **(आर्यान्)** विद्या-धर्म्मादि-उत्कृष्ट-स्वभावाचरणयुक्त आर्यों को **[(वि जानीहि)]** जानो। **(ये च दस्यवः)** और जो नास्तिक, डाकू, चोर, विश्वासघाती, मूर्ख, विषयलम्पट, हिंसादिदोषयुक्त उत्तम कर्म में विघ्न करनेवाले, स्वार्थी, स्वार्थसाधन में तत्पर, वेदविद्याविरोधी अनार्य मनुष्य **(बर्हिष्मते)** सर्वोपकारक यज्ञ के विध्वंसक हैं, इन सब दुष्टों को आप **(रन्धय)** = समूलान् विनाशय = मूलसहित नष्ट कर दीजिये और **(शासदव्रतान्)** ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यासादि धर्मानुष्ठानव्रतरहित वेदमार्गोच्छेदक अनाचारियों को यथायोग्य शासन करो (=शीघ्र उन पर दण्ड निपातन करो)। जिससे वे भी शिक्षायुक्त होके शिष्ट हों, अथवा उनका प्राणान्त हो जाये, किंवा हमारे वश में ही रहें। **(शाकी)** तथा (आप ही) जीव को परम शक्तियुक्त शक्ति देने, और उत्तम कामों में प्रेरणा करनेवाले हो। आप हमारे दुष्ट कामों से निरोधक हो। मैं भी **(सधमादेषु)** उत्कृष्ट स्थानों में निवास करता हुआ **(विश्वेत्ता ते)** तुम्हारी आज्ञानुकूल सब उत्तम कर्मों की **(चाकन)** कामना करता हूं। सो आप पूरी करें॥ १४॥

स्तुति-विषय

न यस्य द्यावापृथिवी अनु व्यचो
न सिन्धवो रजसो अन्तमानशुः।
नोत स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यत
एको अन्यच्चकृषे विश्वमानुषक्॥ १५॥

ऋ० १।४।१४।४॥

व्याख्यान — हे परमैश्वर्ययुक्तेश्वर! आप इन्द्र हो। हे मनुष्यो! **[(न यस्य द्यावापृथिवी अन्तमानशुः)]** जिस परमात्मा का अन्त = **'इतना यह है'** न हो। उसकी व्याप्ति का परिच्छेद (= इयत्ता) परिमाण कोई नहीं कर सकता तथा दिव अर्थात् सूर्यादि लोक, सर्वोपरि आकाश तथा पृथिवी मध्य निकृष्ट लोक ये कोई उसके आदि अन्त को नहीं पाते। क्योंकि **(अनुव्यचः)** वह सबके बीच में अनुस्यूत (= परिपूर्ण) हो रहा है तथा **(न सिन्धवः)** अन्तरिक्ष में जो दिव्य जल तथा **(रजसः)** सब लोक सो भी अन्त नहीं पा सकते। **(नोत स्ववृष्टिं मदे)** वृष्टिप्रहार से युद्ध करता हुआ वृत्र (= मेघ) तथा बिजुली गर्जन आदि भी ईश्वर का पार नहीं पा सकते। हे परमात्मन्! आपका पार कौन पा सके? क्योंकि **(एकः)** एक = असहाय अपने से भिन्न स्वसामर्थ्य से ही **(विश्वम्)** सब जगत् को **(आनुषक्)** आनुषक्त अर्थात् उसमें व्याप्त होते, **(चकृषे)** = **कृतवान्** = आपने ही उत्पन्न किया है। फिर जगत् के पदार्थ आपका पार कैसे पा सकें? तथा **(अन्यत्)** आप जगत् रूप कभी नहीं बनते, न अपने में से जगत् को रचते हो, किन्तु अनन्त अपने सामर्थ्य से ही जगत् का रचन धारण और लय यथाकाल में करते हो। इसके आपका सहाय हम लोगों को सदैव है॥ १५॥

thearyasamaj.org

सम्पादकीय....

बालन्द में स्थित नाथ सम्प्रदाय का मठ

जिला रोहतक में रोहतक से बेरी मार्ग पर बालन्द ग्राम है। इसमें नाथ सम्प्रदाय से सम्बद्ध दो मठ (डेरे, गद्दी) हैं। इसमें से बड़ा मठ लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व स्थापित हुआ था। इसके संस्थापक महन्त बाबा मस्तनाथ के शिष्य भालोठ ग्राम निवासी श्री बाबा मिरचनाथ थे। इस मठ की स्थापना की निश्चित तिथि तथा क्रमश: सभी महन्तों का कालक्रम एक बही में लिखा चला आता था। १९९४ में किसी ने उस बही को नष्ट कर दिया, अत: मठ की स्थापना की सही तिथि ज्ञात नहीं हो सकी।

इस मठ के अभी तक नौ महन्त गद्दी पर बैठ चुके हैं। वे इस प्रकार हैं-

१. श्री मिर्चनाथ (संस्थापक)
२. श्री भैरवनाथ
३. श्री साहबनाथ
४. श्री बूजननाथ
५. श्री श्योलालनाथ
६. श्री बुधनाथ
७. श्री रामनसिंह नाथ (२० वर्ष महन्त रहे)
८. श्री शर्मानाथ (१८ वर्ष महन्त रहे)
९. श्री महेन्द्रनाथ (वर्तमान महन्त)

महन्त मिरचनाथ के सहयोगियों में शिलकानाथ (भालोठ), वनखण्डी और वनखण्डी मैणाभाई भी थे। बाबा मस्तनाथ जी बोहर से आज्ञा लेकर बाबा मिरचनाथ जी पृथक् मठ की स्थापना के लिये चले। मस्तनाथ जी ने आदेश दिया कि १२ कोस से पहले मठ नहीं बनाना। बोहर से बालन्द आकर विश्राम करके आगे बेरी जाने का उपक्रम जब मिरचनाथ जी ने किया तो बालन्द ग्राम के लोगों ने पैरों में गिरकर यहीं मठ बनाने को प्रार्थना की। जब मिरचनाथ जी ने बाबा मस्तनाथ जी की आज्ञा सुनाई तो ग्राम के लोगों ने कहा बोहर से छ: कोस बालन्द आना और वापिस जाना ये मिलकर १२ कोस हो जाते हैं। इस प्रकार महन्त मिरचनाथ जी ने बालन्द में मठ की स्थापना कर दी और बाबा मस्तनाथ जी के पास जाकर ग्रामवासियों के अत्याग्रह की बातें बता दीं। यह सुनकर बाबा मस्तनाथ जी ने आशीर्वाद दिया और कहा कि ज्योति से ज्योति जलाते रहना। अर्थात् यह गुरु परम्परा चलती रहनी चाहिए।

अस्तु! बालन्द मठ के महन्त श्री महेन्द्रनाथ जी गुरुकुल झज्जर में स्वामी ओमानन्द जी के पास औषध आदि लेने अनेकबार पधारे। इसी अन्तराल में उन्होंने कहा कि उनके मठ में बहुत से हस्तलिखित ग्रन्थ आधे-अधूरे रूप में पड़े हैं। हमारे यहां तो कोई उनको जानने, समझने और पढ़नेवाला नहीं हैं। आपके काम का कोई ग्रन्थ हो तो देख लीजिए। यह सुनकर स्वामी ओमानन्द जी एकबार बालन्द गये और उन पाण्डुलिपियों को ले आए। मैंने उन पाण्डुलिपियों को पढ़ा, वर्गीकृत किया तो पाया कि कुछ ग्रन्थ विक्रम संवत् १८८५ (सन् १८२८) ई० के हैं। अनेक ग्रन्थों की प्रतिलिपि जोधपुर (राजस्थान) में की गई थी।

इन ग्रन्थों में अष्टाध्यायी का सूत्रसंग्रह, प्रक्रियाग्रन्थ, धातुपाठ, कौमुदी, सारस्वत व्याकरण, योगदर्शन भोजवृत्ति, गुरुगोरखनाथकृत योगशास्त्र, भतृहरिशतक, चाणक्यसूत्र, गीता, शिव-विष्णु, दुर्गा नाम माहात्म्य, उपनिषत् तथा दर्शन आदि के १८० के लगभग ग्रन्थ हैं। अधिकतर ग्रन्थ अपूर्ण हैं। प्रतीत होता है बालन्द मठ में कभी कुछ विद्वान् साधु अवश्य रहा करते होंगे। श्री महन्त महेन्द्रनाथ जी ने बताया कि हमारे मठ में एक ताम्रपत्र है, उस पर

thearyasamaj.org

क्या लिखा है सो पूरा समझ में नहीं आता। उसे भी देखना चाहिए। अतएव मैं २६ अप्रैल १९९५ को बालन्द गया और ताम्रपत्र देखा इस ताम्रपत्र पर दानपत्र लिखा है। जोधपुर के महाराजधिराज श्री मानसिंह ने संवत् १९९५ वि० (सन् १९३७ ई०) में बालन्दवाली महन्त वीर श्री मिरचानाथ की गद्दी को २०००) (दो हजार रुपये) कुम्भारी परगने के अन्तर्गत भुंडेल का रैनगोर गांव तथा उसकी श्रावणी फसल दान में दी थी। यह महान् दान पत्र तखतगढ़ (जोधपुर) में दिया गया था। यह दानपत्र श्रावण बदि ३ सं० १९९४ को दिया गया। ताम्रपत्र के आरम्भ में श्री जालन्धरनाथ जी को स्मरण करके एक कटार का चित्र बनाया गया है। दानपत्र में दान देने वाले की प्रशंसा तथा दान देकर वापिस लेनेवाले की निन्दा दो श्लोकों के द्वारा वर्णित की गई है। जैसे-

स्वदत्तां परदत्तां वा ये पालयन्ति वसुन्धराम्।
ते नरा: स्वर्गं यान्ति यावच्चन्द्रदिवाकरौ॥ १॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेद् वसुन्धराम्।
ते नरा नरकं यान्ति यावच्चन्द्रदिवाकरौ॥ २॥

श्लोकों के अन्त में राजा, दीवान, चीकीनवीस आदि आठ अधिकारियों के कार्यालय की स्वीकृति लिखी है। सम्भव है इन आठों के पास इस ताम्रपत्र की प्रतिलिपि आदि रही होगी। इनके कार्यालय में इस दानपात्र का उल्लेख तो अवश्य ही रहा होगा।

महाराज जोधपुर बालन्द में पधारे भी थे। जोधपुर की वास्तुकला के अनुसार ही बालन्द के मठ का एक पुराना भवन बना हुआ है, इसकी दीवार एक गज से अधिक चौड़ी है।

महन्त श्री महेन्द्रनाथ जी ने मठ में एक बहुत पराना तम्बू भी दिखाया इसके नीचे पांच हजार व्यक्ति सुविधा से बैठ सकते थे। कभी यहां रथ भी था, उसका एक पहिया अभी तक उसकी स्मृति को ताजा करता रहता है। पाण्डुलिपियों में ही कुछ पुराने कागज ऐसे भी थे, जिन पर मठवासियों ने हिसाब लिखा हुआ था, आज के युग में यह हिसाब बहुत महत्त्वपूर्ण लगता है, इसके कुछ उदारहण नीचे दिये जातें हैं-

ऊपर जिस तम्बू की चर्चा की गई है, वह तम्बू इन कागजों के अनुसार आषाढ़ बदि १ संवत् १९२३ वि० में बनवाया गया था। इसको सिलनेवाले सात दर्जी थे। मामन दर्जी, गुणावठी का दर्जी रामजस, (रामसा), चैनसुख, रामबक्स, सुन्दरलाल, फकीरा और सुखीराम चमार। इन सब लोगों को तेरह दिन के इकत्तीस रुपये आठ आने मजूदरी दी गई। ३००) का तम्बू का कपड़ा, ६८) की रूई, ४६) कपड़े की रंगाई, १५) के बांस कड़ी दिल्ली से आये इस प्रकार पूरे तम्बू पर ५६८ रु० दो आने व्यय हुआ था।

अन्य भाव आदि इस प्रकार हैं-

१. १०२) रु० के दो बैल मथुरा दिलसुख से लिये। १) के सवा मन चणे, १०) का २६ सेर घी, साढ़े सात रुपये के तीन मन चावल, १) का सात सेर तेल, १) की ४५० पूली ज्वार की, १) की ३०० पूली बाजरा की, २) की २०० पूली बाजरा ब्याज में ली। महन्त लोग ब्याज पर रुपया भी देते थे तथा जहां शादी विवाहों में भेंट लेते थे, वहां भेंट भी करते थे। इस बात की चर्चा पुराने कागजों में लिखी हुई है। १५) गाड़ी की जोड़ी काठ की, दो आने का कुड़ती का रेजा, एक आना इसकी सिलाई, चार आने अंगरखी की सिलाई।

२. खूंडू नामक व्यक्ति का ६) रु० दिये थे। उसने रुपये न देकर बदले में जो सामान दिया वह इस प्रकार दिया था-- ८० सेर बाजरा, ९ सेर बाजरा, २५ सेर गेहूं।

thearyasamaj.org

३. ब्याज की दर ऐसे लिखी है-संवत् १९१७ का ५५) रु० पर सवा तीन रु० ब्याज। एक पैसा ब्याज पर बारह रुपये दिये।

४. महन्त जी के डेरे पर रहनेवाले साधु सन्तों के भोजन हेतु तथा पशुओं के लिए निम्नलिखित सामान की खरीद की चर्चा बार-बार की गई है- घी, खांड, शक्कर, चावल, जौ, मकई, ज्वार, बाजरा, नमक, तूड़ा, खल आदि।

५. संवत् १८८९ से संवत् १९२२ (सन् १८३२ से १८६६) तक इस प्रकार के भाव आदि का विवरण मिला है। उस समय लोगों के नाम भी आज की अपेक्षा बहुत विचित्र होते थे। जैसे- सेदु, दुन्दी, तेली, अलामेर, सोलवन नाई, अदली,खेमला पाली, आदु ब्राह्मण, पीतराम ब्राह्मण, भिखारी, सदर पूरबिया, गरीबा, होमा, हठी, होढी, लंगड़ा आदि।

६. आठ आने प्रतिमास पर चमारों की पाली रखते थे। किसी-किसी को एक रुपया महीना पर भी नौकर रखते थे।

७. बालन्द के डेरे में महन्तों के शिष्य आदि बहुत से लोग रहते थे। संवत् १८८९ से १९२३ वि० संवत् के पन्नों में इन साधुओं के कुछ नाम मिले हैं जो इस प्रकार हैं-

बालकनाथ	भौरानाथ	बूंटीनाथ (गढ़ीवाला)
रामनाथ	पोरदाननाथ	नैणानाथ (दिल्लीवाला)
जौहरीनाथ	बलदेवा	भागमलनाथ
दिलसुखनाथ	जीसुख	खेमनाथ
सुलतान	टोडरनाथ	मलुखनाथ
गुलाबनाथ	सुजाननाथ	प्रेमनाथ
देवीनाथ	रामसुखनाथ	ज्ञाननाथ
बुधनाथ	सनासुख	मोहरनाथ
सुचेतनाथ	साहिबसुख	उदयनाथ
बख्तावरनाथ	जगतानाथ	फूलनाथ वाघपुरीया
जसरामनाथ	अमीनाथ	मुखरामनाथ
केसोनाथ	बाघनाथ	भोपालनाथ
स्थालगननाथ	समझनाथ	रामकलानाथ
साहिबनाथ	गरीबनाथ (सुन्दरपुर)	रतीनाथ
हणवन्तनाथ	हरकेशनाथ	बख्तराम
गुमानीनाथ	(हरकेरुसनाथ)	शुभनाथ
दयापुरी गुसाई	स्योरामनाध	चैनसुखनाथ
नानकनाथ	मिसरीनाथ	मेघनाथ
जुहारनाथ	प्रभातनाथ	मयानाथ
खूबीनाथ	रामसीनाथ राणा	नचलनाथ (भमिया)
लखीराम	बस्तीनाथ	हरदपलनाथ (बीघड़)
रामसीनाथ	भागीनाथ	राजनाथ (खरकड़)
जीरामनाथ	इंदराजनामा	छैलनाथ
बेगराज	रामकिशननाथ	मगनीनाथ
गूगन	सुंडानाथ	भैरूनाथ
दाताराम	हरनदयालनाथ इत्यादि।	

अन्त में महन्त श्री महेन्द्रनाथ जी का बहुत आभारी हूं, जिन्होंने इस लेख को लिखने में सामग्री प्रदान करने की कृपा की । इन्होंने गुरुकुल झज्जर संग्रहालय के लिए दो पुराने वाद्ययन्त्र तथा एक पुरानी चिमनी (लालटेन) भी दी थी, एतदर्थ भी मैं इनका हृदय से आभारी हूं।

विरजानन्द दैवकरणि
गुरुकुल झज्जर

thearyasamaj.org

गाय का अर्थशास्त्र

O डॉ० भरत, झुनझुनवाला

हमारी संस्कृति में गाय की पूजा की जाती थी, क्योंकि वह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थों की पूर्ति में मददगार थी। सामलाती (साझा) चारागाहों में चराई करके गाय गोबर का उत्पादन करती थी जिससे भूमि का स्वास्थ्य बना रहता था। यह धर्म हुआ। गाय दूध देती थी और बैल पैदा करती थी। बैल से खेती की जाती थी। यह अर्थ हुआ। गाय के दूध में सालिड नान फैट की मात्रा ज्यादा रहती है। ये मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए विशेषकर बुद्धि के विकास के लिए लाभदायक होता है। गाय का दूध पीने से लोगों का स्वास्थ्य अच्छा बना रहता था। यह काम हुआ। गाय से चारों पुरुषार्थों को हासिल करने में मदद मिलती थी। पिछली राजग सरकार ने गोरक्षा के लिए आयोग बनाया था। अपनी रिपोर्ट में आयोग ने कहा था कि हमारी संस्कृति में गोरक्षण अंधविश्वास के कारण नहीं, बल्कि गाय की उपयोगिता के कारण किया जाता था।

पिछले ५० वर्षों में गाय के अर्थशास्त्र में मौलिक परिवर्तन हो गया है। सामलाती चारागाह लुप्त प्राय हो गए हैं। पूर्व में इन चारागाहों से गाय अपना पेट भरकर आती थी। उसे अतिरिक्त भोजन नहीं देना पड़ता था। घास को वह दूध और गोबर में परिवर्तित कर देती थी। गाय के गोबर से खाद बनाई जाती थी, जो खेत की उर्वरकता को बनाए रखती थी। बीते समय में सामलाती चारागाहों पर बाहुबलियों ने कब्जा कर लिया है। फलस्वरूप गाय को चराने के लिए घास उपलब्ध नहीं है। अब गाय केवल भूसे पर आश्रित हो गई है। चारागाह के अभाव में गोबर का उत्पादन कम हो रहा है। उपलब्ध गोबर खेत की उर्वरकता को बनाए रखने के लिए पर्याप्त नहीं है। अत: किसानों को रासायनिक फर्टिलाइजर का सहारा लेना पड़ रहा है। गाय को पालने की अनिवार्यता समाप्त हो गई है। साथ-साथ ट्रैक्टर ने बैलों का सफाया कर दिया है। शहरों में तमाम रोजगार उत्पन्न होने के कारण गांव से पलायन हुआ है। गांव में श्रमिक उपलब्ध नहीं है। बच्चों की शिक्षा पर जोर देने से इनके द्वारा भी चराई नहीं कराई जा रही है। फलस्वरूप गाय को चराई के लिए ले जाना कठिन हो गया है। गाय को चरना पसंद है। भैंस की प्रकृति भिन्न है। उसे चरने के लिए नहीं ले जाना होता है। इसके अलावा भैंस के दूध में फैट ज्यादा होता है, जो उपभोक्ता को पसंद है। गाय की नर संतान यानी बछड़े का वध करने पर कई राज्यों में कानूनी प्रतिबंध है। ये बछड़े किसान के लिए तनिक भी उपयोगी नहीं है। भैंस की नर संतान का वध करना वर्जित नहीं है। इन अनेक कारणों से किसान भैंस को ज्यादा पसन्द कर रहा है और गाय की संख्या कम होती जा रही है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की चौकड़ी में अर्थ बिदक गया है। गाय से भूमि का संरक्षण हो, बच्चों की बुद्धि बढ़े और वृद्धों को मोक्ष मिले तो भी किसान की आर्थिक स्थिति गड़बड़ हो रही है। महाराजा रणजीतसिंह ने गोवध पर प्रतिबंध लगाया तो किसान की आर्थिकी को भी संभाला। उस समय लोग स्वाद के लालच में गोमांस खाना चाहते थे। इस अल्पदर्शिता से जनता को ऊपर उठाने के लिए गोवध पर प्रतिबंध लगाया गया था।

आर्थिक नीतियों को ठीक करना होगा जिनके कारण किसान के लिए गाय को पालना घाटे का सौदा हो गया है। गांव के सामलाती चारागाहों

thearyasamaj.org

को कथित विकासवाद और माफियाओं से मुक्त कराना होगा। सीमांध्र की नई राजधानी के लिए अथवा गुड़गांव में साफ्टवेयर पार्क बनाने के लिए या फिर मंत्रियों के चहेतों को लाभ पहुंचाने के लिए भूमि प्राप्त करने का सबसे अच्छा और आसान उपाय गांव के सामलाती चारागाहों पर कब्जा करना है। सभी राज्य सरकारों द्वारा सामलाती भूमि को बड़े पैमाने पर लैंड यूज में बदलाव करके शहरी कार्यों के लिए डाइवर्ट किया जा रहा है। इसे बंद करना चाहिए। सामलाती चारागाहों को बाहुबलियों के कब्जे से मुक्त कराना चाहिए।

रासायनिक फर्टिलाइजरों को सब्सिडी दी जा रही है। साठ के दशक में देश के सामने खाद्यान्न की समस्या उत्पन्न हो गई थी। देश को शीघ्रातिशीघ्र खाद्यान्न का उत्पादन का उत्पादन बढ़ाना था। उस समय रासायनिक फर्टिलाइजर पर सब्सिडी देकर इनका उपयोग बढ़ाया गया जिसके बल पर आज देश अपनी जरूरत के खाद्यान्न पैदा कर रहा है। लेकिन उस आपद धर्म को हमने लंबे समय तक बढ़ा दिया है। आज हम पोटाश और फास्फेट का बड़ी मात्रा में आयात कर रहे हैं। इनके स्थान पर हमें भूसे और गोबर का आयात करना चाहिए। सस्ते आयातित भूसे को किसान को मुहैया कराने से गायों की संख्या में वृद्धि होगी। इनके द्वारा उत्पादित गोबर से फर्टिलाइजर की जरूरत को पूरा करना चाहिए। नब्बे के दशक में गोबर का आयात करने का प्रयास किया गया था। तब देश के बुद्धिजीवियों ने इसका विरोध किया था जो गलत था। फास्फेट का आयात करके अपनी भूमि को बर्बाद करने के स्थान पर गोबर का आयात करके अपनी भूमि की दीर्घकालीन उर्वरकता बनाए रखना चाहिए। ऐसा करने से किसान को गोबर की उपयोगिता समझ आएगी और गाय की ओर रुझान बढ़ेगा।

गाय और भैंस के दूध की गुणवत्ता के अंतर को जनता तक पहुंचाना चाहिए। वर्तमान में उपलब्ध फैट की मात्रा के आधार पर दूध की खरीद होती है। फैट की होड़ में गाय पीछे रह जाती है। बच्चों को भैंस का दूध पिलाया जा रहा है। सरकार को चाहिए कि व्यापक शिक्षा कार्यक्रम लागू करे जिसके माध्यम से गाय के गुणों से जनता को अवगत कराया जाए। लक्ष्य होना चाहिए कि गाय के दूध की मांग बढ़े और उसके दाम बड़ें जिससे किसान के लिए गाय को पालना लाभप्रद हो जाए। बैल की समस्या पेचीदा है। ट्रैक्टर के कारण बैल अनुपयोगी हो गए हैं। हमारे सामने कठिन चुनौती है। बैल का संरक्षण करेंगे तो गाय को पालना भी किसान के लिए हानिप्रद हो जाएगा। बिजली और डीजल पर सब्सिडी देकर सरकार द्वारा ऊर्जा के इन स्रोतों को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके स्थान पर भूसे पर सब्सिडी देकर बैल के उपयोग को बढ़ाया जा सकता है परन्तु इस कदम की सफलता पर मुझे संदेह है, क्योंकि खेती में कुल ऊर्जा की जरूरत को बैलों के माध्यम से पूरा करना संभव नहीं लगता है। इस बिन्दु पर गहराई से अध्ययन करने की जरूरत है। मूल बात यह है कि सरकार गोहत्या पर कितने भी प्रतिबंध लगा ले, गाय अगर किसान के लिए घाटे का सौदा रहेगी तो उसका संरक्षण नहीं हो पाएगा।

thearyasamaj.org

आज महर्षि दयानन्द की आवश्यकता है

O **देशराज आर्य,** से.नि. प्रधानाचार्य रेवाड़ी

आज के वर्तमान असमंजस, अन्धकारमय एवं डांवाडोल वातावरण में महर्षि दयानन्द जी जैसे त्यागी, तपस्वी, निर्लेप, परोपकारी महामानव की अत्यन्त आवश्यकता है। एक ऐसा ऋषि जिसने जहर देनेवाले को भी क्षमा कर दिया और दूर निकल भागने के लिए धन भी दिया। जिन्होंने पत्थर मारे उनको वेदामृतपान कराया, जिन्होंने गालिया दीं उन्हें आशीर्वाद दिया। स्वयं भयंकर कष्ट एवं यातनाएं सहन की और आह तक न की। समस्त जीवन मानवमात्र की भलाई ही करते रहे। नहीं कोई मठ मन्दिर बनाया, नहीं चेले चेलिने बनाये और नहीं अपने नाम से कोई अलग मत चलाया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि मैं वैदिक धर्म की ही पुनः स्थापना कर रहा हूँ मेरा अपना कुछ नहीं है। महर्षि का सकल जीवन एक खुली पुस्तक की तरह सार्वजनिक रहा जिसे जो, जब चाहे पढ़े। जैसा भोजन मिला निश्चित समय पर खाया। एक कौपीन (लंगोटी) मात्र धारण कर सन्देश दिया कि जब देश की निर्धन जनता के पास तन ढ़कने के वस्त्रों का अभाव हो तो वे कैसे वस्त्र धारण करते? महर्षि दयानन्द का जीवन सतयुग और त्रेता के ऋषि मुनियों जैसा ही था। संसार का दुर्भाग्य था कि उनको जहर देकर शीघ्र विदा कर दिया, अन्यथा भारतवर्ष की ऐसी दुर्दशा नहीं होती और यदि महर्षि ने आर्यसमाज नहीं बनाया होता तो कल्पना की जा सकती है समाज की क्या दशा होती? मानवता और सभ्यता रसातल में चली जाती। आज जो कुछ बचा है महर्षि के आर्यसमाज के कारण ही बच पाया है। बेशक कोई व्यक्ति आर्यसमाज को जानता भी न हो, मानता भी न हो परन्तु महर्षि के सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव चाहे अनचाहे, जाने अनजाने समस्त समाज एवं मनुष्य मात्र पर पड़ा है।

आज स्थान-स्थान पर स्वयंभू तथाकथित धर्म के ठेकेदार बनकर किलेनुमा मठमन्दिर बनाकर अय्याशी और ऐश्वर्य का समस्त साजो-सामान जमाकर जीवन का मजा लूट रहे हैं। मूर्ख नासमझ अज्ञानी जनता का शोषण कर रहे हैं। भोले भाले लोगों की धार्मिक आस्थाओं को कुचल रहे हैं। महिलाओं को आश्रमों, डेरों और अखाड़ों में रखा जारहा है। पुरुषों को नपुंसक बनाकर गृहस्थ जीवन को नष्ट किया जारहा है। नशे, बेहोशी तथा बाजीकरण की औषधियां, विदेशी शराब, अश्लील सी.डी. एवं साहित्य शौचालयों में और महिलाओं के शयन कक्षों में खुफिया कमरों से अपने वैभवशाली कक्ष में बैठे-बैठे ही सब कुछ देखने का सामान जमा है। महिलाओं को उनको बच्चों और पतियों से अलग रखा जाता है विशेष चौकानेवाली बात यह है कि अधिकांश महिलाएं विधवा हैं या परित्यक्ता हैं जो आश्रम में ही रहती हैं उन्हें अपने घर-परिवार से कोई वास्ता नहीं है। ऐसे विलाशतापूर्ण जीवन से तो एक गृहस्थी को भी घिन होगी, जबकि सन्त बनकर इन सबका उपभोग किया जाता है। किलेनुमा महल में तरणताल, भूमिगत कक्ष, सुरंगें तथा तहखानों में आपत्तिजनक सामग्री जमाकर रखी है। गुप्तवास से सन्त का क्या वास्ता हो सकता है? भूतप्रेत और जादू-टोने के अंधविश्वास से जनता को भ्रमित कर उनसे धन ऐंठा जा रहा है। वेद की सच्ची शिक्षा नहीं मिलने पर मनुष्य भटक गया है। वह जहां भी तथा जिस ओर भी जाता है उसे धर्म के नाम पर ऐसी ही ठगी की दुकानें मिलती हैं जहां उसकी अंधश्रद्धाभक्ति

thearyasamaj.org

का शोषण होता है। ऐय्याशी के ऐसे ठिकानों पर वैसी ही मनोवृत्ति के व्यक्ति भी जमा हो जाते हैं जो अपने तथाकथित मठाधीश के रहनुमा एवं रक्षक बनकर सब मौज-मस्ती का आनन्द लेते हैं। शासन और प्रशासन के व्यक्ति भी वहां नतमस्तक होकर उन मठाधीशों का मनोबल बढ़ाते हैं।

सन्त महात्माओं के जीवन को कसौटी पर परखने के लिए अपने प्राचीन ऋषि-मुनियों के जीवन आदर्शों को देखा जा सकता है। ज्यादा समय पहले नहीं तो आज से १९० वर्ष पूर्व ही दृष्टिपात कर ऋषि दयानन्द जी के जीवन आदर्श को ही मार्गदर्शक रूप में देख सकते हैं। वेद और गीता में तो स्पष्ट उल्लेख है कि मानव जैसा कर्म करेगा उसे वैसा ही फल ईश्वर द्वारा प्राप्त होगा। मनुष्य कर्म करता है और ईश्वर फल देता है। अच्छे कर्म का अच्छा और बुरे कर्म का बुरा ही फल मिलेगा। बुरे कर्म करके दान, पुण्य, तीर्थस्थान या कलयुगी तथाकथित सन्त महात्माओं की शरण में जाने से क्षमा नहीं मिलती। ईश्वर व वेद का प्रमाण है कि न्यायकारी परमात्मा हमारे बुरे कर्म को क्षमा नहीं करता, हां यदि हम बुरे कर्म के साथ कुछ अच्छा कर्म करते हैं तो **उसका फल अलग से मिलेगा**। बुरे और अच्छे कर्म का जमा खर्च हिसाब बराबर नहीं होता। पाप कर्म का फल मानव को अवश्य ही भोगना पड़ता है। फिर ढोंगी बाबाओं और डेरे आश्रमों में जाना मूर्खता नहीं तो क्या है?

महान् आश्चर्य तो इस बात का है कि तथाकथित ढोंगी बाबाओं ने व धर्म के ठेकेदारों ने स्वयं को ईश्वर समझ लिया है। इसके बड़ी मूर्खता और विनाश का कारण क्या हो सकता है कि जगत् रचयिता स्वयं ही बन बैठे तथा मूर्ख जनता को सतलोक में भेजने का ढोंग रचकर अनाचार करने लगे। ऐसे पापियों को सन्त कहकर सम्बोधन करना भी **सन्त** शब्द का अपमान करना है। आदि शंकराचार्य यहां तक स्वामी तुलसीदास जी ने भी स्वयं को भगवान् का भक्त माना और भगवत् भक्ति का आनन्द लिया, जग में नाम कमाया, राम चरितमानस महाकाव्य रचा और एक सौ छब्बीस वर्ष जीवन जीया। अनेक सन्तों ने स्वयं को भगवान् का भक्त ही समझा और भक्ति रस का आनन्द लिया। क्या आज के तथाकथित बाबा और सन्त तुलसीदास जैसे सन्त का मुकाबला कर सकेंगे? लाज आनी चाहिए ऐसे ढोंगियों को जिनके कर्त्तव्य पापियों के और समझते हैं स्वयं को भगवान् और भगवान् को किसी से डर कैसे लग सकता है? भगवान् को अपनी रक्षा के लिए चेलों की फौज रखने की क्या आवश्यकता है? इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या होगा कि ऐसे सन्त, भक्तों को सतलोक भेजने का ढोंग फैलाकर धन ऐंठकर मौज उड़ाते हैं। सबसे बड़ा आश्चर्य इस बात का है कि ऐसे ढोंगियों की काली करतूतों का पर्दाफाश होने पर भी मूर्ख और अन्धे लोग उनमें श्रद्धा रखते हैं। उन्हें अच्छे और बुरे का विवेक नहीं। बुद्धि का दिवाला निकल गया है अन्धविश्वासी जनता का। ईश्वर ऐसे लोगों को बुद्धि देता कि वे अपने विवेक से अच्छे बुरे का निर्णय कर गलत मार्ग से बच सकें।

— ९४१६३३७६०९

thearyasamaj.org

विश्वशान्ति को औषध

O आचार्य आर्यनरेश, वैदिक शोधक उद्गीथ
साधना स्थली, हिमालय

मनुष्य संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है प्रायः सभी लोग ऐसा मानते हैं। प्रश्न उत्पन्न होता है कि आज जो पृथ्वी तल पर सर्वत्र अशान्ति तथा अग्निवृष्टि हो रही है क्या उसका कारण पशु पक्षी अथवा कृमि हैं? रात्रि १२ बजे यदि आप अपने घर से बाहर कहीं एकान्त में जाते हैं तो आप के डरने का कारण सांप, बिच्छू, भेड़िया, पागल कुत्ता तथा बघेरा नहीं अपितु दो टांग का सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्य ही है। संसार के लगभग दो सौ देशों में प्रतिदिन कहीं न कहीं जिहादी आतंकवाद, मजहबवाद, वासना, लोभ, अभिमान, मनमाने घमण्ड के कारण हजारों मनुष्य मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं।

क्या भगवान् ने हमें इस पृथ्वी पर 'जन्म' परस्पर लड़ने-झगड़ने के लिए दिया है? अथवा एक-दूसरे का सहयोग करते आत्मानन्द हेतु? यदि लड़ने हेतु जन्म का लक्ष्य होता तो भगवान् न तो हमें जन्म के साथ परस्पर प्रेम से आत्मवत् रहने का उपदेश करता तथा न ही एक साथ यहां जन्म देता। व्यक्तियों की परिवार के सर्वसदस्यों की, पड़ोसियों, प्रान्तीयों व प्रदेशियों की चल रही लड़ाइयों का मूलकारण अपने आत्मिक व्यवहार को भूल जाना ही है। संसारनिर्माता निराकार ओम् ने सृष्टि के आदि में पृथ्वी पर सुखपूर्वक रहने का जो उपदेश हमें अग्नि, वायु, आदित्य और अङ्गिरा द्वारा वेद में दिया था उसे हम भूल गए। परमपिता ओम् ने यजुर्वेद अध्याय ४० में लिखा था-आत्मवत् व्यवहार इस जीवन को सुखी व पर जीवन-मोक्ष को आनन्दित बनाता है। अपने हेतु चाहने वाले 'सुख' की कामना ओरों के साथ न करें। दूसरों से व्यवहार करते समय यह सोचें कि यदि ऐसा अपने साथ हो तो कैसा रहे? एवं अपने साथ अच्छा चाहने वाले व्यवहार को सब में अपने जैसा आत्मा जानकर वैसा अच्छा सुखकारी मानकारी लाभकारी व्यवहार करें। धरती पर स्वर्ग उतारने का यह सर्वश्रेष्ठ वैदिक सूत्र है।

भगवान् को मानना, उस का जपध्यान करना हो तभी सार्थक तथा सफल हो सकता है जब हम उसके समक्ष प्रार्थना-याचना हेतु गिड़गिड़ाने से पूर्व उसके वेदोपदेश को मानकर सब प्राणियों से न्यायोचित आत्मवत् व्यवहार करें। क्या हम पृथ्वी पर अन्य मनुष्यों की हिंसा, चोरी, मिलावटखोरी से स्वास्थ्यहत्या एवं मान हानि करके सब के पिता ओमू का आशीर्वाद पा सकते हैं? क्या एक दूसरे का गला काटने वाले वाले एवं छोटों व बलहीन भाइयों की हत्या व चोट से पिता कभी उन पुत्रों को कुछ देगा? कदापि नहीं। इसी कारण आज से लगभग २ अरब वर्ष पूर्व प्रभु ने वेद में कहा एक दूसरे से प्यार करो, मिलकर चलो, मिल बांटकर खाओ, धरती के सब पदार्थों का मिलकर प्रयोग करो। ऋग्, यजु०, साम व अथर्ववेद यही शिक्षा देते हैं। कर्मकाण्ड का महान् ग्रन्थ यजुर्वेद 'सर्वभूतेषु चात्मानम्' का उपदेश देता। प्रभु उसे ही संसार का सुख, समाधि व मोक्ष का आनन्द देते हैं जो सब में अपने आत्मा को जानकर उचित व्यवहार करता है। अपने आपको सब में जानना, अपने जैसा मानना ही आत्मा का विभुत्व है। यही आत्मा की व्यापकता है। यूं तो आत्मा सत्ता रूप में एकदेशीय है परन्तु जब हम अपने जैसा सबमें आत्मा मानकर व्यवहार करते हैं तब व्यवहार की दृष्टि से व्यापकत्व सिद्ध होता है। अन्यथा न्याय दर्शन व आयुर्वेद में आत्मा के विभुरूप को ईश्वरवत् मानना वेदविरुद्ध हो जाता है क्योंकि चेतन सत्ता की दृष्टि से ईश्वर ही मात्र विभु है एवं आत्मा एकदेशीय है। मन अपने साधारण व्यवहार के लिए एकदेशीय है एवं ध्यान

hearyasamaj.org

योग विज्ञान से सर्वगत भी है देखें सत्यार्थप्रकाश अष्टम समु०। आत्मा एकदेशीय है परन्तु स्थिति विशेष में शरीर के अन्तर्गत ही स्थान परिवर्तन करता है-स.प्र.८ समु०। साधारण दृष्टि से आत्मा अल्पज्ञ है परन्तु ध्यान योग विज्ञान से सीमित सर्वज्ञान प्राप्त कर सकता है। सर्व का अर्थ केवल सब स्थान पर रहने वाला या सर्वव्यापक नहीं होता अपितु बहुज्ञान वाला भी होता है परन्तु ईश्वरवत् सर्वज्ञ नहीं। किसी ने कहा सारी मण्डी में टमाटर ही टमाटर भरा हुआ था। इस का अभिप्राय यह नहीं कि कुछ और था ही नहीं, अपितु इसका वास्तविक अर्थ यह है कि मण्डी में टमाटर बहुत था। सर्वत्वमिति-आधिकारिकम् सूत्र से।

स्व-आत्मा की सत्ता, ज्ञान, अनुभव सुख-दुख इच्छा-द्वेष का औरों में भी अनुभव करते हुए ऐसा कोई व्यवहार न करना जिससे कि किसी सज्जन को, परिवार को समाज को, प्रान्त को, परदेशों को और प्राणियों को हानि कष्ट या हिंसा हो। यही मानवधर्म है जो आज सम्पूर्ण संसार को अशान्ति की अग्नि से बचाकर शान्ति की वृष्टि करवा सकता है। यही आत्मा का विभुत्व व विशालता अथवा व्यापकता है। जब तक संसार में यह वैदिक मानव धर्म चलता रहा धरती सुख-स्वर्ग का धाम बनी रही। जब से मन-माने अल्पज्ञ लोगों के दूसरों की हिंसा व अपने सम्प्रदाय वालों की मित्रता के मजहब चल पड़े धरती माता अपने ही मानव भाइयों के रक्त से लाल हो गई। प्रभु वेद में धरती पर सुख शान्ति तथा स्वर्ग हेतु मनुष्यों के साथ ही अहिंसा, भाईचारा एवं मित्रता का उपदेश नहीं करता अपितु अन्यप्राणियों के साथ भी मित्रभाव का उपदेश करता है। 'मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समक्षन्ताम्'। बिना कारण बिना अपराध बिना दोष किसी को दण्डित करना, मारना व कत्ल करना आत्मशान्ति तथा प्रभु आनन्द से दूर जा कर पृथ्वी पर नरक लाना है। अन्याय ही हिंसा और अधर्म है न्याय ही अहिंसा और परमधर्म है। इसकी सब से सरल कसौटी अपना आत्मा वा अपनों का आत्मा है। जो अपने एवं अपनों के लिए अथवा अपने देश के लिए नहीं चाहिए ऐसा व्यवहार औरों और देशों के लिए न करना ही मानव धर्म है। पाकिस्तान बलोचिस्तान का बंटवारा नहीं चाहता, हम कश्मीर क्यों चाहें। तीन व्यक्तियों वाली बस-गाड़ी की कुर्सी पर अकेले बैठना वा सोना और दूसरों को खड़ा रखना तब बहुत बुरा लगेगा जब आपके साथ भी कहीं ऐसा ही होगा। अपने कौन हिंसा। अपने घर में चोरी, अपना अपमान, अपने घर में मिलावटी सामान हमें अच्छा नहीं लगता अत: ऐसा दूसरों के साथ भी न करें यही आत्मधर्म है। अपने देश में अपने नागरिकों की आतंकवाद से, शोषण से जातिवाद व रङ्गवाद अथवा चोरी-डकैती से हिंसा तथा दूसरे देश की घुसपैठ एवं दूसरे देश वालों के समर्थन में नारे और देश के किसी भाग को तोड़ने का षड्यंत्र कोई नहीं अच्छा मानता, अत: कोई भी देश पाकिस्तान, बंगलादेश, अमेरिका या इंग्लैण्ड भारत के साथ न करे यही विश्वमानव धर्म है। किसी देश के अधिकारी नहीं चाहते कि उनके राष्ट्र की प्रजा का मजहब बदल दिया जाए। क्या अमेरिका, इंगलैण्ड, इटली यह चाहते हैं कि वहां के लोग आर्य बना लिए जाएं जबकि कभी उन सब देशों में आर्य थे जो मानव धर्मी हैं जब वे अच्छा परिवर्तन नहीं चाहते, तो हमारे आर्यों को मांसाहारी, शराबी, आतंकवाद दुष्ट ईसाई, मुसलमान बनाना भारतीय कैसे चाहना कर सकते हैं। संसार का प्रत्येक राष्ट्र चाहता है कि बाहर उसके नागरिकों व रुपयों (करंसी) का मान हो अत: भारत भी अपने रुपये का डालर व पोण्ड के बराबर मान चाहता है।

thearyasamaj.org

एक मन्त्र दो गीत

O देवातिथि देवनारायण भारद्वाज, वरेण्यम्
रामघाट मार्ग, अलीगढ़, उ०प्र०

आकर उत्पात-उदासी हन।
स्वदेश में लौट प्रवासी मन॥
छा गये यहां कुविचारी हैं।
विश्वास हीन भयकारी हैं।
अब हृदय हीन है हृदय देश,
सत्कार हीन सत्कारी हैं।
वैभव विकास विश्वासी बन।
स्वदेश में लौट प्रवासी मन॥ १॥
हो अंग अंग कर्त्तव्य ढंग।
हर प्रजा दीक्षित दिव्य अंग।
हो आशा दूर निराशा हो,
संजीवन सम्यक उमंग।
लेकर शिव श्वेत शुभाषी धन।
स्वदेश में लौट प्रवासी मन॥ २॥
हो जाये अभिनव सूर्योदय।
प्रासाद-कुटी सब हों निर्भय।
हों सभी सभी के सहयोगी,
हो न्याय नियम हो अन्त्योदय।
करदे उदार अधिशासी जन।
स्वदेश में लौट प्रवासी मन॥ ३॥

ना भटको मन ना भटकाओ।
मन मेरी ओर लौट आओ॥
पथ में किंचित् अवरोध पड़ा।
या हुआ कहीं गतिरोध खड़ा।
आशा गयी निराशा आयी,
तो फिरता मन उखड़ा-उखड़ा।
ना उखड़ो मन ना उखड़ाओ।
मन मेरी ओर लौट आओ॥ १॥
मन फिरसे तुम कर्मण्य बनो।
बल विद्यायुत श्रुतिगम्य बनो।
दीक्षा और दक्षता द्वारा,
जीवन्त और ध्रुव धन्य बनो।
ना जकड़ो मन ना जकड़ाओ।
मन मेरी ओर लौट आओ॥ २॥
तुम यहां लौट कर आओगे।
फिर ज्योतिर्मय हो जाओगे।
इस चिरंजीव जीवन में
नित सूर्य सुमग चमकाओगे।
मन मनन नमन लेकर आओ।
मन मेरी ओर लौट आओ॥ ३॥

स्रोत – आ त एतु मनः पुनः क्रत्वे दक्षाय जीवसे।
ज्योक् च सूर्यं दृशे॥ ऋ० १०.५७.४१॥

thearyasamaj.org

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - एक गणितीय समीकरण

O देवनारायण भारद्वाज

प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा (यजु० ७-१४) सबसे प्रथम सम्पूर्ण संसार द्वारा वरणीय संस्कृति आधारित संस्थायें-यथा आर्यसमाज की भाँति भारत विकास परिषद् ने भी अपना ध्येय वाक्य **'कृण्वन्तो विश्वर्मायम्'** उद्‌घोषित करके अत्यन्त प्रोत्साहनपूर्ण कार्य किया है। यह वाक्य भारतीय संस्कृति के मूलाधार तत्त्वों की ओर सबका ध्यान आकर्षित करता है। करे भी क्यों न जब वेदमाता ही अपने पुत्रों से ऐसा करने का कह रही है-

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

अपघ्नन्तो अराव्णः॥ -ऋग्वेद (९-६३-५)

अर्थात्-हे (अप्तुरः) सत्कर्मों में निपुण सज्जनो! (इन्द्रम्) परम् ऐश्वर्यशालियों को (वर्धन्तः) बढ़ाते हुये (अराव्णः) अदानी-दुष्कर्मी-पापियों का (अपघ्नन्तः) नाश करते हुए (विश्वम्) सबको-संसार को (आर्यम्) श्रेष्ठ (कृण्वन्तः) बनाते रहो। प्रस्तुत मन्त्र में तीन वाक्य हैं। मध्य स्थित हमारे इस ध्येय वाक्य के एक बाँयें और एक दाँयें।

आइए इस रहस्य को एक गणितीय समीकरण से समझने का प्रयत्न करें-

(अ)		(इ)	(अ)	(आ)		
(अप्तुरः	+	**इन्द्रम्)**	**-अराव्णः**	**=आर्यम्**		
ब्रह्मयज्ञः सम्पर्क		सुगतिशीलता	अनुदारता	अद्रोह	प्रगतिशील	वपु
देवयज्ञः सहयोग		सम्पन्नता	अदानता	अनुग्रह	दानशील	वस्त्र
अतिथियज्ञः संस्कार		संयम	कृपणता	दान	ज्ञान सम्पन्न	विद्या
पितृयज्ञः सेवा		सम्प्रभुता	ईर्ष्या	लज्जा	श्रेष्ठ	वैभव
बलिवैश्वदैवयज्ञः समर्पण		सौजन्य	स्वार्थपरता	प्रशंसा	लक्ष्यलब्धि	वाणी

१. संसार को श्रेष्ठ बनाने की चिन्ता कौन करे- संसार में अधिसंख्य व्यक्ति अपने जीवन यापन में लगे रहते हैं। फिर भी कुछ आप्त पुरुष होते हैं, जो जीवन में पंच महायज्ञों को अपनाते चलते हैं, जो जीवन में पंच महायज्ञों को अपनाने चलते हैं, जिन्हें हम ब्रह्मयज्ञ (आस्तिकता), देवयज्ञ (शुद्धता), अतिथि यज्ञ (सत्कार्यता), पितृयज्ञ (कृतज्ञता), बलिवैश्वदेव यज्ञ (सहभागिता) के नवीन संस्करण के रूप में सम्पर्क, सहयोग, संस्कार, सेवा एवं समर्पण के नाम से जानते हैं। इन पंच सूत्रों को स्वीकार करनेवाले व्यक्ति ही समाज में उच्चादर्श स्थापित करने के लिए निरन्तर सचेष्ट रहते हैं। यहां पर पंच सूत्रों का संकेत भर किया है, विस्तार फिर कभी।

२. आर्यत्व या श्रेष्ठता का मूलाधार इन्द्रत्व का विकास - वेद में 'इन्द्र' के बहुत व्यापक प्रयोग हैं। यहां पर तात्पर्य ऐसे तेजस्वी व्यक्तियों से है, जिनका मनोबल सदैव उत्तम कार्यों के लिए बढ़ा हुआ रहता है। जिनमें विद्युत् सी गतिशीलता, आत्मा-शरीर-समाज एवं ऐश्वर्य बल की सम्पन्नता, इन्द्रियजनित विषय-वासनाओं के प्रति संयमशीलता, अपने स्वत्व पर सम्प्रभुता या स्वामित्व, तथा सबके

thearyasamaj.org

प्रति सौजन्य की भावना होती है। समाज के नेतृत्वकर्त्ता जन अपने संकल्प-प्रकल्पों के माध्यम से ऐसे ही इन्द्रत्व गुणशील व्यक्तियों की वृद्धि करते हैं।

३. समाज-द्रोहियों को विनाश भी आवश्यक- दुग्ध से परिपूर्ण कलश में यथोचित मात्रा में शर्करा मिला देने से वह मधुर, स्वादिष्ट और पोषक हो जाता है। थोड़ी शर्करा से कम मीठा होगा, फिर भी वह पोषक बना रहेगा। इसके विपरीत कुछ कम बूँदें विष की उसमें मिला दी जायेंगी, तो वह सम्पूर्ण कलश-विषकलश बन जायेगा, और पोषण के स्थान पर प्राणहरण का कारण बन जायेगा। समाज के नेताओं को किसान का अनुकरण करना पड़ेगा, जो अपनी मूल्यवान फसल को बचाने और बढ़ाने के लिए खरपतरवारों का विनाश करना रहता है। उदार दानशील उत्तम गुणवाले व्यक्ति को रावण कहा गया, किन्तु उसने निज नाम को अपने काम से बदनाम कर दिया। अपने बालकों के नामकरण में कोई भी इस संज्ञा का सदुपयोग नहीं करता। 'अराव्ण:' कोटि के वही व्यक्ति होते हैं, जिनमें अनुदारता, अदानता, कृपणता, ईर्ष्या और स्वार्थपरता कूट-कूट कर भरी होती है। व्यक्तियों में इन्द्रत्व गुण बढ़ाने से अराव्ण: गुणों का नाश होता है। यदि उनमें ऐसा आन्तरिक परिष्कार संभव नहीं होता, तो ऐसे व्यक्तियों के समूल नाश का अभियान **'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्'** गीतोपदेश के अनुरूप चलाना पड़ता है। प्रवहमान गंगाजल की भाँति दानशीलता अकेले ही अनेक सद्गुणें की आधार बन जाती है, जबकि इसके विपरीत ठहरा हुआ पानी सड़कर दूषित-विषैला और रोगों के लिए संक्रमणकारी बन जाता है। इसी प्रकार एक दानशीलता का सद्गुण अनेक उत्तम गुणों की वृद्धि करता है, और एक अदानशीलता के अवगुण से व्यक्तियों में दुर्गुणों का समूह घर कर लेता है। उदासीन, आचरणहीन या पथभ्रष्ट जनों की संस्थाओं की सत्संगति प्रदान कर, उनमें दान की प्रवृत्ति विकसित की जा सकती है और वे श्रेष्ठ व्यक्ति बनाए जा सकते हैं। ऐसे व्यक्तियों से इतिहास के पृष्ठ भरे हुए हैं।

४. आर्य को सर्वोदय स्वीकार्य - उपरोक्त समीकरण के अनुसार 'अराव्ण:' व्यक्तियों के अभाव के फलस्वरूप 'असुर:' एवं 'इन्द्र' गुण के व्यक्ति मिलकर समाज को आर्य रूप प्रदान कर देंगे। विद्वानों के मत में जो इन्द्र हैं वे आर्य हैं। 'ऋ' गतौ धातु से व्युत्पन्न 'आर्य' शब्द प्रगतिशील, दानशील, ज्ञान सम्पन्न, श्रेष्ठता एवं लक्ष्य लब्धि का परिचायक है। दानशील होने का अभिप्राय है-अपना ही नहीं औरों का भी हित चिन्तन करना। स्वयमोदय के साथ-साथ सर्वोदय उसका अभीष्ट बन जाता है। महाभारत-शान्तिपर्व में वर्णित- (१) मन, वचन, कर्म से सब प्राणियों के प्रति अद्रोह-बैर त्याग (२) सुपात्र पर अनुग्रह, कृपा, दया करना (३) यथाशक्ति दान व सहायता करना (४) जिस कार्य से किसी का अहित हो, मन में घृणा हो या लज्जित होना पड़े, उसे न करना (५) जिस कृत्य से मानव समाज में सराहना एवं सुकीर्ति हो-उसे ही करना, ये पंचशील उसकी सम्पत्ति बन जाते हैं। 'अकर्मा: दस्यु:' (ऋ० १०-२२-८) के उपलक्षण से 'सकर्मा: आर्या:' अर्थात् आलसी निष्क्रिय व्यक्ति दस्यु के समान हैं और कर्मशील पुरुषार्थी व्यक्ति आर्य हैं।

निर्माण और कल्याण के कार्यों में निशिवासर संलग्न व्यक्ति ही आर्य अथवा श्रेष्ठ हैं। आप किसी के शारीरिक सौष्ठव (वपु), वेशभूषा (वस्त्र), ज्ञानानुभव (विद्या), सम्पदा (वभव) तथा वार्तालाप

thearyasamaj.org

(वाणी) के समुच्चय को परख कर उसके आर्य-अनार्य (श्रेष्ठ-निकृष्ट) होने का आभास कर सकते हैं।

५. आर्यत्व (श्रेष्ठता) की शास्त्रीय संरचना- यास्काचार्य ने अपने निरुक्त में 'आर्य ईश्वरपुत्रः' अर्थात् प्रभुवर के गुण-व्रतधारी, ईश्वर के भक्त, ईश्वर को मानने वाले आस्तिक को आर्य कहा है। 'आर्या ज्योतिरग्राः' (ऋ० ७-३३-७) आर्य या श्रेष्ठ व्यक्ति जिधर जाते हैं, ज्योति उनके आगे-आगे चलती है, अन्धकार मिट जाता है। ज्ञान ही ज्योति है-अज्ञान ही अन्धकार है। "वैश्वानर ज्योतिरिदर्याय" (ऋ० १-५९-२) जगदीश्वर में विज्ञान की ज्योति को आर्यो का श्रेष्ठ संकल्पशील जनों के लिए प्रकाशित किया है। "आर्यस्व वर्धनमग्निम्" (ऋ० ८-१०-३-१) ईश्वरीय अग्नि (ज्ञान) आर्यों की वृद्धि व समुन्नति करती है। "आर्यमृतस्य भागे" (ऋ० १-१५६-५) आर्य या श्रेष्ठ पुरुष सत्य, धर्म, विद्या के अमृत सुख को भोगने वाले हैं। "स्वर्मनते ज्योतिरार्यम्" (ऋ० १०-४३-४) मननशील श्रेष्ठ पुरुष आनन्ददायिनी ज्योति के अधिकारी होते हैं।

महर्षि दयानन्द की भाँति योगी अरविन्द ने भी आर्य शब्द की अपार महिमा का बखान किया है। अतिशय नैतिक, सामाजिक, आदर्शपूर्ण, सुनियन्त्रित जीवन, साहस, सरलता, न्याय, नियम, धैर्य, स्थैर्य, गाम्भीर्य, औदार्य, माधुर्य, पवित्रता, सद्व्यवहार, दया, निर्बलों की सहायता, ज्ञान ग्रहण की आतुरता, विद्वानों के प्रति आदरभाव एवं निपुणता आदि को 'आर्य' शब्द स्वयं में समाहित किये हुये है। मानवीय सम्वाद सृष्टि में इससे बढ़कर कोई पद नहीं है जो इतना सदाशयी, मृदुल, उल्लास से भरपूर हो। इन सद्गुणों की सूची देखकर कोई भी इन्हें एक मनुष्य में दुर्लभ समझ सकता है। वास्तव में यह नितान्त असम्भव नहीं है। एक ही सद्गुण अन्य गुणों को एकत्र कर लेता है और एक ही दुर्गुण अन्य दुष्प्रवृत्तियों का आधार बन जाता है। सामाजिक सांस्कृतिक संस्थायें अपने प्रेरणापूर्ण प्रयास से आर्यकरण अथवा श्रेष्ठ सौमनस्य सम्पन्न संसार के सृजन में सहयोगी रहती हैं। उक्त समीकरण को कुछ इस प्रकार हल कर लेने पर बात सरल हो जायेगी-

असुरः + इन्द्रम् - अराव्णः = आर्यम्

अ + (इ) - (अ) = (आ)

अथवा इ (इन्द्र) = आ (आर्य)

अर्थात् इन्द्रत्व गुण व्यक्ति ही आर्य है, अथवा आर्यत्वगुण व्यक्ति ही इन्द्र है। ये ही सर्वत्र श्रेष्ठता एवं सौमनस्य के सर्वोदय का सुहावना साम्राज्य स्थापित कर सकते हं।

thearyasamaj.org

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय

शुक्रताल जिला मुजफ्फरनगर

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर उत्तरप्रदेश में १ अप्रैल से प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल महाविद्यालय गंगा के तट पर स्थित है। यहाँ संस्कृत भाषा के साथ-साथ कम्प्यूटर सहित आधुनिक विषयों का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों के द्वारा कराया जाता है। छात्रों को उत्तम संस्कार प्रदान करने हेतु प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या, हवन एवं यौगिक क्रियायें करायी जाती हैं। सुसज्जित छात्रावास उपलब्ध है। छात्रों को सादा एवं पौष्टिक भोजन दिया जाता है। यहां मध्यमा स्तर (इन्टरमीडिएट) की परीक्षाएं उ०प्र० माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद् लखनऊ तथा महाविद्यालय स्तर का पाठ्यक्रम सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा संचालित है। संस्था में प्रवेश के लिए छात्र का ५ वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।

कृपया अपने होनहार बच्चों को संस्कार युक्त शिक्षा दिलाने हेतु दूरभाष पर वार्ता करके प्रवेश दिलायें। प्रवेश नियम डाक से अथवा व्यक्तिगत रूप से प्राप्त कर सकते हैं। विद्यालय में २ रसोइया, एक वार्डन (संरक्षक), एक क्लर्क की आवश्यकता है शीघ्र सम्पर्क करें। अधिक जानकारी फोन से प्राप्त की जा सकती है।

आचार्य इन्द्रपाल
मुख्य अधिष्ठाता
मो० ९४११९२९५२८

प्रेमशंकर मिश्र
प्रधानाचार्य
मो० ९४११४८१६२४
९९९७०४७६८०

गुरुकुल आश्रम आमसेना का ४८वां वार्षिकोत्सव

७ से ९ फरवरी २०१५ को सम्पन्न

ओड़िशा में गुरुकुल आश्रम आमसेना के ४८वें वार्षिक महोत्सव पर दो होनहार युवक ब्रह्मचारी अंकित कुमार एवं ब्रह्मचारी महीधर आर्य ने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर अपना जीवन देश धर्म के लिए समर्पित किया तथा श्री स्वर्गीय चौ० मित्रसेन जी आर्य की पुण्य स्मृति में स्वामी सुधानन्द सरस्वती, डॉ० ब्रह्ममुनि वानप्रस्थी (महाराष्ट्र), महात्मा चैतन्यमुनि (हिमाचल प्रदेश) का सम्मान २१ हजार रुपये की राशि, शॉल, श्रीफल एवं अभिनन्दन पत्र के साथ किया गया। इसी क्रम में ३० वानप्रस्थियों, १६ आर्य वृद्धों तथा गुरुकुल में दीक्षित ब्रह्मचारियों के माता-पिता का भी सम्मान किया गया।

इस अवसर पर केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्री सुदर्शन भगत एवं स्थानीय विधायक श्री बसंत भाई पण्डा भी महोत्सव में जनता को सम्बोधित करने के लिए पधारे थे।

महोत्सव का शुभारम्भ अथर्ववेद पारायण यज्ञ के साथ हुआ तथा खरियार रोड नगर में भव्य शोभायात्रा भी निकाली गई। आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वानों के उद्‌बोधन के साथ महोत्सव सम्पन्न हुआ।

निवेदक
डॉ० कुञ्जदेव मनीषी

thearyasamaj.org

राष्ट्रगीत और वन्देमातरम्

वन्दे मातरम्, इन दो शब्दों ने न जाने कितने वीरों को बलिदान की प्रेरणा दी!

'वन्दे मातरम्' ब्रिटिश सरकार के लिये बम का गोला था

○ प्रकाश वीर शास्त्री

संविधान सभा में जब राष्ट्र भाषा, राष्ट्र नाम और राष्ट्र ध्वज का निर्णय हो चुका तो राष्ट्रगीत ही एक ऐसा प्रश्न अन्त में बचा, जिस पर निर्णय होना बाकी था। कुछ सदस्य स्वाधीनता संग्राम में वन्दे मातरम् गीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को लेकर उसे राष्ट्रगीत बनाना चाहते थे और कुछ जन-गण-मन के पक्ष में थे। जो जन-गण-मन को राष्ट्रगीत बनाने के पक्ष में थे, वे उसकी धुनपर अधिक मुग्ध थे। स्वयं प्रधान मंत्री जी उनमें से एक थे। यद्यपि २५ अगस्त १९४८ को संविधान सभा में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए नेहरू जी ने स्वयं कहा-जो भाव गाम्भीर्य और प्रेरणाप्रद इतिहास वन्दे मातरम् का है वह जन-गण-मन का नहीं है। पर गाने में और बैंड पर बजाने में जो उमंग जन-गण-मन से आती है उतनी वन्दें मातरम् से नहीं आती। संविधान सभा से बाहर भी राष्ट्र गीत को लेकर उन दिनों अच्छी हलचल दिखायी दे रही थी। बात बहुत न बढ़े यह सोचकर अन्त में फिर यही निर्णय हुआ-दोनों गीतों को समान दर्जा दिया जाय। संविधान सभा में इस आशय का प्रस्ताव करने की बजाय अध्यक्ष (राजेन्द्र बाबू) ही इस सम्बन्ध में एक वक्तव्य दे दें।

उसी आधार पर २४ जनवरी १९५० को संविधान सभा जिस दिन समाप्त होने लगी उस दिन राजेन्द्र बाबू ने अध्यक्ष आसन से राष्ट्रगीत सम्बन्धी अपना वक्तव्य देते हुऐ कहा- इस सभा ने अभी एक प्रशन पर विचार नहीं किया है। वह प्रश्न है राष्ट्रगान का। पहले यह विचार था-इस विषय को सभा के समक्ष रखा जायगा और वह एक प्रस्ताव द्वारा इसके सम्बन्ध में एक निर्णय करेगी। किन्तु जब यह समझा गया कि राष्ट्रगान के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव स्वीकार कर रस्मी तौर से निर्णय करने के स्थान पर मैं ही एक वक्तव्य दे दूं। इसलिए मैं यह देता हूं- ''जिस गान के शब्द तथा स्वर '' 'जन-गण-मन' के नाम से विख्यात हैं वह भारत का राष्ट्रगान है। किन्तु उसके शब्दों में सरकार की आज्ञा से यथोचित अवसर पर हेरफेर किया जा सकता है। वन्दे मातरम् के गान का, जिसका भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से ऐतिहासिक महत्त्व रहा है, जन गण मन के समान ही सम्मान किया जायगा और उसका पद भी उसके समान ही रहेगा (हर्ष ध्वनि) मुझे आशा है इससे सदस्यों को सन्तोष हो जायगा।''

संविधान सभा की इस अन्तिम दिन की कार्यवाही में दो ही महत्त्वपूर्ण विषयों पर घोषणा होनी शेष थी-पहला तो भारत का राष्ट्रगान क्या हो और दूसरा भारत का प्रथम राष्ट्रपति कौन हो। दोनों पर अन्दर ही अन्दर कुछ दिनों तक काफी तनाव-सा रहा। बाहर भी कभी कभी हल्की-सी झलक उस तनाव की दिखायी दे जाती थी। पर आखिर में सर्व सम्मति से दोनों ही दोनों प्रश्न हल हो गये। देश

thearyasamaj.org

के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू बने और राष्ट्रगीत जन-गण-मन और वन्दे मातरम् दोनों। राजेन्द्र बाबू को संक्षिप्त बधाइयां देने के बाद संविधान सभा अनश्चित काल के लिए स्थगित हो गयी। स्थगन से पूर्व श्रीमती पूर्णिमा बनर्जी ने सदस्यों के साथ पहले जन-गण-मन गाया और उसके बाद अध्यक्ष के आदेश पर ही श्री लक्ष्मीकान्त मैत्र के साथ सदस्यों ने खड़े होकर वन्दे मातरम् गाया, इस तरह दोनों राष्ट्रगीतों को संवैधानिक स्वीकृति ही केवल उस दिन नहीं दी गयी अपितु उनके व्यवहार पक्ष की भी स्थिति स्पष्ट कर दी गयी। उसके बाद तो फिर वर्षों तक यही सिलसिला चला। सरकारी और गैरसरकारी समारोहों में भी राष्ट्रगीत सम्बन्धी यही पद्धति अपनायी जाती रही। कोई भी समारोह जन-गण-मन से प्रारम्भ हो तो वन्दे मातरम् से समाप्त हो, और जो वन्देमातरम् से प्रारम्भ हो तो जन-गण-मन पर समाप्त हो।

लेकिन कुछ वर्षों बाद फिर न जाने कैसे धीरे-धीरे वन्दे मातरम् की ध्वनि मन्द होने लगी। जो गीत पराधीन भारत में कोटि-कोटि भारतवासियों का प्रेरणास्रोत था वह स्वाधीन भारत में आकर सूखने लगा। इसमें कुछ बड़े नेताओं का संकेत यदि न भी हो तो भी उन्हें प्रसन्न करने के लिए ऐसा किया जाने लगा। कोई भी निर्णय जब यह भी और वह भी के चक्कर में फंस जाता है तो उसकी यह गत बनती है। देश के नाम की जब बात आयी तो इण्डिया इसलिए आजतक भारत इण्डिया जो भारत है ऐसा लचीला निर्णय ले लिया गया। इसलिए आजतक भारत इण्डिया के बोझ से दबा पड़ा है। इसी तरह राजभाषा का जब प्रश्न आया तो हिन्दी और अंग्रेजी दोनों प्रमुख और सहभाषा के रूप में स्वीकार हो गयी। परिणाम -स्वरूप आज स्वतंत्रता के रजत जयन्ती वर्ष में भी हिन्दी सरकारी दफ्तरों के किसी अज्ञात कोने में पड़ी सुबकियां ले रही है। ऐसी ही लगभग बात राष्ट्रगीत की भी हुई है। उसी का बहाना बनाकर बम्बई नगर के कुछ मुस्लिम विद्यालयों में वन्दे मातरम् सम्बन्धी एवं अवांछनीय विवाद उठ खड़ा हुआ। नगर निगम के चुनावों में भी राजनीतिक हथियार के रूप मे मुस्लिम लीग ने उसे इस्तेमाल किया और आठ स्थान सीधे जीते। विभाजन के बाद जो मुस्लिम सिकुड़ कर केरल के एक कोने में हो गयी थी उसने फिर ऐसे भावनात्मक प्रश्नों को उभारकर अपना ताना-बाना पूरना प्रारम्भ कर दिया। पीछे कुछ संसद सदस्यों ने जब सरकार से वन्दे मातरम् सम्बन्धी वस्तुस्थिति जाननी चाही तो गृह उपमंत्री श्री फखरुद्दीन मोहसिन ने संसद में एक प्रश्न के उत्तर में कह दिया-राष्ट्र गीत तो जन-गण-मन ही है। पर सरकार को विश्वास है कि वन्दे मातरम् को भी उचित सम्मान दिया जायगा। श्री मोहसिन के इस उत्तर में और संविधान सभा के अध्यक्ष राजेन्द्र बाबू के अध्यक्षीय आसन से दिये गये उस वक्तव्य में कितना अन्तर है? जिसमें उन्होंने वन्दे मातरम् को जन-गण-मन के समान सम्मान देने की ही बात केवल नहीं कही अपितु उसका दर्जा भी उसके समान ही माना जायगा यह भी साथ साथ दोहरा दिया।

मुस्लिम लीग ने आज ही नहीं विभाजन से आठ-दस वर्ष पहले भी वन्दे मातरम् को लेकर एक तूफान देश में खड़ा करना चाहा था। उस समय भी यही घिसी-पिटी दलीलें, जो आज दी जा रही हैं, दी गयी थीं। हमारे मजहब में अल्लाह के अलावा और किसी को माथा झुकाना नहीं लिखा है अथवा

thearyasamaj.org

इसमें मूर्ति पूजा (बुतपरस्ती) की गन्ध आती है आदि आदि। मुस्लिम लीग के इस विषैले प्रचार का उत्तर देते हुए स्वयं गांधी जी ने पहली जुलाई १९३९ के 'हरिजन' में लिखा था-

"वन्दे मातरम् गीत चाहे जहां से लिया गया हो और चाहे जब लिखा गया हो बंग-बंग (आन्दोलन) के दिनों में बंगाल के हिन्दुओं और मुसलमानों के लिए यह संघर्ष का एक बहुत प्रभावपूर्ण नारा बन गया था। किशोरावस्था में ही, जब मैं 'आनन्द मठ' में था, उसके अमर रचयिता बंकिम बाबू से परिचित न था, वन्दे मातरम् पर न्योछावर हो चुका था। जब मैंने पहली बार इसका गायन सुना तो मैं उस पर मुग्ध हो गया। मैं इसे पवित्र राष्ट्रीय भावना का प्रतीक मानता हूं। मुझे कभी सूझा ही नहीं कि यह हिन्दुओं का गीत है और केवल उन्हीं के लिए है। दुर्भाग्यवश अब हमारे बुरे दिन आगये हैं। पहले जो शुद्ध सोना था, आज वह घटिया धातु बन गया है। मिली जुली सभा में वन्दे मातरम् का गायन कराकर मैं किसी तरह के झगड़े की आशंका उठने नहीं देना चाहता। यह (वन्दे मातरम्) कोटि-कोटि जनों के हृदय में बसा है। इसे सुनकर बंगाल और उसके बाहर लाखों करोड़ों जनों के हृदय में देश प्रेम का सागर हिलोरे लेने लगता है। बंगाल ने हमें अनेक स्पृहणीय वस्तुएं दी हैं, उनमें से एक है उसका यह उत्कृष्ट पद, जो समूचे राष्ट्र के लिए एक देन है।"

अभी पीछे बम्बई में जब वन्दे मातरम् को लेकर यह विवाद चला तो सर्वोदय नेता आचार्य विनोवा भावे ने तो इसे हठधर्मिता और प्रगाढ़ अज्ञान की संज्ञा देते हुए अपने एक वक्तव्य में कहा-

"वन्दे मातरम् राष्ट्रीय गान का अनादर करने का कुछ मुस्लिम बन्धुओं द्वारा जो प्रयास किया जा रहा है, वह एक हेकड़ी ही है। धर्म के नाम पर वन्दे मातरम् का विरोध पवित्र कुरान के सम्बन्ध में उनका प्रगाढ़ अज्ञान ही व्यक्त करता है।" वास्तव में हाथ जोड़ने में कोई हर्ज नहीं है। कुरान सूरत १ के आयत ५१ के अनुसार मुस्लिमों को भगवान् को प्रणिपात करने का ही आह्वान किया गया है। बिनोवा जी द्वारा कुरान का जो मराठी अनुवाद किया गया है उसमें इस आयत का अनुवाद किया गया है-चन्द्र को, सूर्य को प्रणिपात करने की आवश्यकता पर जिसने इसे दुनिया को उत्पन्न किया उस भगवान् को प्रणिपात करो।"

भारत सरकार ने अपने प्रकाशन विभाग द्वारा संविधान सभा में राष्ट्रगीत सम्बन्धी घोषणा हो जाने के बाद इन दोनों गीतों के सम्बन्ध में एक पुस्तिका प्रकाशित की है जिसका नाम है-हमारे राष्ट्रगीत। श्री फखरुद्दीन मोहसिन के कथनानुसार यदि केवल जन-गण-मन ही राष्ट्रगीत है तो उक्त पुस्तिका का नाम हमारा राष्ट्रगीत होना चाहिये था न कि हमारे राष्ट्रगीत। इस पुस्तिका में दोनों राष्ट्रगीतों की जो पृष्ठभूमि दी गयी उसमें भी स्पष्ट लिखा है- यह दोनों पवित्र ऐतिहासिक गीत हैं- और पुराने दु:खद दिनों की याद दिलाते हैं। गीत भारत के महानतम साहित्यकारों ने लिखे हैं। वन्दे मातरम् के सम्बन्ध में लिखा है-

"इन दोनों गीतों में वन्दे मातरम् अधिक पुराना गीत है।" यह बंकिमचन्द्र के उपन्यास 'आनन्द मठ' में १८८२ में छपा था। वैसे यह शायद इससे भी आठ-दस वर्ष पहले लिखा गया था। राजनीतिक मंच से यह गीत सबसे पहले १८९६ में इण्डियन नेशनल कांग्रेस के अधिवेशन में गाया गया था।

thearyasamaj.org

रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने इसकी स्वरलिपि तैयार की थी। आगे चलकर बंग-भंग आन्दोलन जमाने में वन्दे मातरम् के सन्देश से लोग बहुत प्रभावित हुए। अप्रैल १९०६ में बंगाल के प्रान्तीय सम्मेलन में, जो बारी साल में हुआ था, यह गीत गाया गया। इस सम्मेलन का सभापतित्व एक मुस्लिम सज्जन ने किया था। उसी वर्ष बाद में स्वयं रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कांग्रेस अधिवेशन के सभारम्भ के अवसर पर यह गीत गाया। धीरे-धीरे इस गीत के पहले दो शब्द राष्ट्रीय आन्दोलन के नारे के रूप में व्यवहृत होने लगे। हालांकि कुछ मुसलमानों ने इसे साम्प्रदायिक कहकर इसका तीव्र विरोध किया। वन्दे मातरम् इन दो शब्दों ने न जाने कितनों को बलिदान की प्रेरणा दी और कुछ तो, मानव-इतिहास में सदा अमर रहेंगे।''

यह गीत राष्ट्रीय गान बनाने योग्य है या नहीं, इस पर विचार करने के लिए १९३७ में कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति ने एक उपसमिति बनायी। इसके सदस्य थे-मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस और आचार्य नरेन्द्र देव-जिन्हें रवीन्द्रनाथ ठाकुर से परामर्श कर निर्णय करना था। इस समिति ने यह प्रस्ताव पास किया था-'सब पहलुओं पर विचार करने के बाद समिति सिफारिश करती है-जब किसी राष्ट्रीय सभा में वन्दे मातरम् गाया जाय तो उसके केवल प्रथम दो पद ही गाये जायं और सभा के संयोजकों को पूरी छूट हो कि वन्दे मातरम् गान के अलावा या उसके स्थान पर कोई भी गीत, जो आपत्तिजनक न हो, गा सकें।''

जन-गण-मन के पहले पद को जब राष्ट्रगीत बनाने की चर्चा चलरही थी तो देश के एक वर्ग को उसके कुछ शब्दों पर भी आपत्ति हुई। उनका कहना था-किसी भी देश के राष्ट्रगीत में ऐसे भूभागों की चर्चा नहीं होनी चाहिए जो अब उसका अंग न रहे हों। अथवा फिर उन्हें वापस लेने का सकंल्प हमारे मन में निहित हो। इस गीत में जिस पंजाब, बंगाल और सिन्ध की चर्चा है उनमें से एक तो पूरा प्रदेश ही पाकिस्तान का अंग बन चुका था। शेष दो का भी तीन चौथाई भाग उन दिनों पाकिस्तान का अंग बन चुका था। प्रधान मंत्री नेहरू जी ने भी संभवत: इसी आधार पर २५ अगस्त, १९४८ को संविधान सभा में कहा था-जन गण मन गीत के कुछ शब्द उपयुक्त नहीं हैं। इनमें तो परिवर्तन करना ही पड़ेगा। पर बाद में या तो उसकी आवश्यकता नहीं समझी गयी अथवा सरकार का ध्यान ही उस ओर नहीं गया।

नेताजी सुभाषचन्द्र बसु ने आज़ाद हिन्द सेना में जन गण मन की धुन में कुछ परिवर्तन कर उसी से मिलता जुलता हिन्दी का एक राष्ट्रगीत तैयार कराया था। आजाद हिन्द फौज सदा उसी गीत की धुन अपने बैंड पर बजाती थी। तीन मार्च, १९४८ को संविधान सभा में जब राष्ट्रगीत सम्बन्धी एक प्रश्न पर पूरक प्रश्न पूछे जा रहे थे तब एक सजग सदस्य श्री हरिविष्णु कामथ ने सरकार का ध्यान उस प्रिय गीत की धुन को भी क्या सरकार ने बजवाकर देखा है जिसकी पहली दो पंक्ति हैं-

शुभ सुख चैन की वर्षा बरसे, भारत भाग्य है जागा
सूरज बनकर जग में चमके भारत नाम सुभागा।

पर सरकार की ओर से इसका कोई उत्तर आने से पूर्व ही अध्यक्ष ने उसे प्रसंग से हटा हुआ

thearyasamaj.org

बता कर रोक दिया। इस तरह वह सुझाव भी आया गया हो गया।

बंकिम बाबू ने जब (१८७२ में) वह गीत लिखा वह समय भारत के लिए बड़ा भयवाह था। १८५७ की क्रान्ति हो चुकी थी और अंग्रेजों का दमन चक्र पूरे वेग से भारत में चल रहा था। हजारों स्वातंत्र्य प्रेमी फांसी पर लटकाये जा चुके थे और हजारों ही कारावास की कठोर यातनाएं भुगत रहे थे। लेखकों की कलमें रगड़ी जा चुकी थीं और मुंह खोलने वालों के होठों पर ताले डाल दिये गये थे। चप्पे चप्पे पर अंग्रेजों के गुप्तचर यह देखने के लिए कहीं फिर तो कोई क्रान्ति की दीपशिखा प्रज्वलित नहीं कर रहा है। ऐसी विषय परिस्थितियों में बंकिम बाबू ने वन्दे मातरम् गीत लिखा। स्वयं उन्हें भी यह कल्पना संभवत: न रही हो कि कभी यह गीत इतना लोकप्रिय हो जायगा। वन्दे मातरम् आगे चलकर तो राष्ट्रगान ही केवल नहीं बना अपितु जयघोष के रूप में भी उसके प्रारम्भिक दो शब्दों का प्रयोग किया जाने लगा। सशस्त्र क्रान्ति में विश्वास रखने वाले हों चाहे अहिंसा में दोनों ही की वन्दे मातरम् में समान श्रद्धा थी। कांग्रेस के अधिवेशनों का प्रारंभ तो होता ही था वंदे मातरम् गान से। इसके अतिरिक्त साहित्यक और सामाजिक सस्थाओं के अधिवेशनों का शुभारम्भ भी वन्दे मातरम् से ही प्राय: होता था।

(स्व.शास्त्री जी देश के प्रखर वक्ता एवं संसद् सदस्य थे। उनका यह लेख 'आज-सायं समाचार' २९.०४.१९७३ से साभार उद्धृत है)

सेना में जाति-आधारित रेजिमेंटों का औचित्य

O मेजर रतनसिंह यादव (सेवानिवृत्त)

१. लाखों वर्ष पूर्व मनुमहाराज ने राज्य तथा समाज की व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए मनुष्यों के कौशल, बुद्धि, शारीरिक बनावट, शक्ति तथा सेवाभाव आदि गुणों को दृष्टिगत रखते हुए उन्हें चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्व, तथा शूद्र आदि में विभाजित किया था। यद्यपि मनुमहाराज ने उपर्युक्त गुणों को जन्म से जाति के आधार पर समझकर व्यक्ति विशेष में पाये जाने वाले गुणों के आधार पर ही उसका समाज में वर्ण निर्धारित किया था। गुणों के अभाव में ब्राह्मण पुत्र शूद्र तथा गुणों के होने पर शूद्रपुत्र ब्राह्मण वर्ण का अधिकारी था।

२. उस युग में विद्याप्राप्ति के लिए गुरुकुल प्रणाली थी जिसमें राजपुत्रों से लेकर जनसाधारण की सन्तानों के लिए समान शिक्षा तथा सुविधाएँ प्राप्त होती ती। परिणामस्वरूप एक समान परिवेश तथा वातावरण में शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् भी व्यक्ति विशेष अपनी निजी रुचि, बुद्धि, प्रकृतिप्रदत्त जन्मजात स्वभाव से प्रभावित होकर किसी एक वर्ण का अधिकारी बन सकता था।

३. आधुनिक विज्ञान ने प्रयोगों के आधार पर यह सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य का सम्पूर्ण व्यक्तित्व वंशपरम्परा तथा वातावरण का मिश्रण है। समान वातावरण में रहते हुए भी अनुवांशिक गुण अति महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऐसा विशेषकर शारीरिक रचना,रूप-रंग, कद-काठी आदि के निर्धारण में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। लम्बे तगड़े, बलशाली माता-पिता की सन्तानें भी उसी प्रकार की पायी जाती हैं। इसमें कुछ अपवाद भले ही हों, पर सामान्य नियम यही है।

thearyasamaj.org

४. ऐसे में दूसरा विचारणीय पहलू यह भी है कि माता-पिता जिस वर्ण से सम्बन्ध रखते हैं, उस घर में उत्पन्न होने वाली सन्तानों को उस घर में उसी वर्णानुसार वातावरण, परिवेश तथा बचपन की शिक्षा मिलती है। जिसका उस पर प्रभाव अवश्यम्भावी है। परिणामस्वरूप ऐसे माता पिता की सन्तानें का उसी वर्ण का अंग बन जाने की सम्भावना बढ़ जाती है। इसी कारण आगे चलकर जाति व्यवस्था बनते बनते कठोर से कठोरतम बनती हुई अन्त में निर्विवाद रूप से बिना किसी अपवाद के शतप्रतिशत पक्की बनती चली गयी। यदि किसी कारण कोई एक ब्राह्मण पुत्र क्षत्रियपुत्र क्षत्रियों चित गुणों से वंचित है तो भी क्रमश ब्राह्मण या क्षत्रिय ही कहलायेगा। परन्तु इसके साथ यह भी सत्य है कि मनुष्य अपनी वंशपरम्परा शारीरिक तथा मानसिक योग्यताएँ ग्रहण करता है।

५. आधुनिक भारतीय सेना में जाति तथा प्रदेश आधारित रेजिमेण्टों का इतिहास ब्रिटिशकालीन भारत की देन है। निस्सन्देह अंग्रेजों ने अपनी फूट डालने की नीति से भारत को पराधीन बनाये रखा, परन्तु इसमें कोई शक नहीं कि अंग्रेज एक बुद्धिमान् कौम है। जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने व्यापार के साथ राज्य करने की सोची तो भारत के विभिन्न प्रदेशों में बसी विभिन्न जातियों की विशेषताओं को जाँचा-परखा तो ऐसी जातियों को अपनी सेना में भरती करना आरम्भ किया जिनमें उन्हें सैनिकोचित गुण दिखायी दिये। शारीरिक रूप से लम्बाकद, बलवान्, परिश्रमी, स्वभाव से उग्र तथा लड़ाकू प्रवृत्ति वाली जातियों की विशुद्ध रेजिमेंट बनायी जाने लगी। परिणाम भी आशा अनुरूप अर्थात् युद्धक्षेत्र में बहादुरी तथा विजय भी मिलने लगी। ऐसी जातियों के लिए अंग्रेजों ने एक नये शब्द AJGR का नाम दिया। A से अहीर, J से जाट, G से गुर्जर तथा R से राजपूत। इन चारों का एक साम्मिलित नाम मार्शल कास्ट दिया गया। इस AJGR में भी जो अंग्रेजों की अधिक स्वामीभक्त तथा विश्वसनीय जाति रही, उनको अधिक वरीयता दी गयी। परिणामस्वरूप जाट रेजिमेंट, सिक्ख (जट्ट) रेजिमेंट में कुछ हिस्सा दिया गया।

जब इतने से काम न चला तो अंग्रेजों की दृष्टि भारत के उन पर्वतीय क्षेत्रों पर पड़ी जिनके निवासियों का जीवन कठोर परिश्रम प्रतिकूल जलवायु तथा प्रकृति से संघर्ष मे बीतता रहा है। इस पर क्षेत्र विशेष को ध्यान में रखकर हिमाचल तथा जम्मू से डोगरा, कुमाऊँ तथा गढवाल रेजिमेंट नेपाल तथा भारत के दार्जिलिंग आदि से गोरखा रेजिमेंट की बड़े पैमाने पर सैनिक भर्तियाँ की गयी।

७. इन जाति आधारित रेजिमेंटो ने जहाँ भारत मे ब्रिटिश राज्य की नींव को सुहढ किया वहीं प्रथम तथा द्वितीय विश्व युद्ध में विदेशों में वीरता के अद्भुत कारनामें कर ब्रिटेन के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार विक्टोरियाक्रास प्राप्त किये जिनकी सूचि बहुत लम्बी है। उदाहरण ढाकला के रिसालदार बदलूसिंह धनखड़ (जाट लांसर) तथा हिमाचल के डोगरा सिपाही लाला, गढवाल रेजिमेंट के २१ वर्षीय गब्बरसिंह नेगी का नाम आजकल समाचार पत्रों में चित्र सहित प्रकाशित किये जा रहे हैं। क्योंकि प्रथम विश्व युद्ध (१९१४-१८) की शताब्दी मनायी जा रही है। हम भारतीय भले ही उन्हें याद न कर कृतघ्नता का पाप अपने इतिहास के पन्नों में दर्ज करा लें, पर अंग्रेज अपने इन जॉबाजों को कृतज्ञतापूर्वक याद कर रहे हैं। एक ही उदाहरण पर्याप्त है मेरे इस कथन की पुष्टि में। कप्तान उमरावसिंह विक्टोरिया क्रास विजेता का स्वर्गवास अभी कुछ ही वर्ष पहले हुआ था तो इंग्लैण्ड की

thearyasamaj.org

सरकार के प्रतिनिधि तथा वहाँ के सैनिक जनरल उनके अन्तिम संस्कार में शामिल हुए उस गाँव की मिट्टी को नमन किया तथा हमारी सेना से आग्रह किया कि यह वीरों का गाँव है, यहाँ के जवानों को सेना में भरती करो।

८. दूसरी ओर हम हैं कि बंगलादेश के विजेता फील्डमार्शल मानेकशॉ के अन्तिम संस्कार में अपने ही देश के एक भी राजनेता ने तामिलनाडु के वैलींगटन तक जाने का कष्ट नहीं उठाया। जो कौम अपने बहादुरों का सम्मान नहीं करती, इतिहास उसे क्षमा नहीं करता।

९. विषय बहुत लम्बा है, कुछ पृष्टों में लेखबध्द न होकर कई भाग की पुस्तकों में ही समा सकता है। वर्तमान में पैदल सेना, आर्मड रेजिमेंट (जो पुरानी घुड़सवार सेना का टैंक से बदला रूप है) तथा तोपखाना कुछ ही पुरानी रेजिमेंटें जाति आधारित बची हैं, नयी रेजिमेंटों में इस समय पर खरी उतरी ऐतिहासिक परम्परा को त्याग दिया है। प्रजातन्त्रीय शासन प्रणाली के दबाव के चलते सेना में बहुत कुछ बदला है, पर प्रत्येक बदलाव श्रेष्ठता के लिए नहीं होता। आज प्रत्येक जाति तथा प्रदेश सेना में अपनी भागीदारी बढाने के लिए जनप्रतिनिधियों के माध्यम से लोकसभा में आवाज उठाते हैं, भले ही उनका सामर्थ्य सेना के योग्य हो या न हो। याद रहे, सेना बेरोजगारी दूर करने का माध्यम नहीं है। इसकी श्रेष्ठ परम्परा के साथ छेड़खानी कर राष्ट्र को खतरे में डालना कहाँ कि समझदारी है।

१०. सेना की अपनी कुछ विशिष्टताएँ हैं। उसे अति उत्साही, कठोर परिश्रमी अनुशासनप्रिय, समय के महत्त्व को समझनेवाले, जानकी परवाह न करनेवाले राष्ट्ररक्षकों की आवश्यकता है। आप किसी भी पुराने जनरल से इस बारे में पूछिये, वह इन जाति आधारित रेजीमेंटों की प्रशंसा करता नहीं थकेगा। १३ कुमाऊँ के रेजागंला युद्ध के अभुतपूर्व बलिदानों की शौर्यगाथा न केवल भारतीय सेना की अपितु संसार भर के युद्ध इतिहास की अद्वितीय मिशाल है। कहना न होगा यह कम्पनी हरियाणा तथा निकटवर्ती इलाके के वीर यादव शूरमाओं की थी जिसका नेतृत्व मेजर शैतान सिंह भाटी (जो वास्तव म प्राचीन यादव वंश की शाखा है) परमवीर चक्र कर रहे थे। चीनी ब्रिगेड ने इस कम्पनी से मुँह की खायी, वापिस लौट गये, बेशक कम्पनी के ११२ जवानों में से कोई ५-४ ही बचे। आज तक किसी एक कम्पनी को इतने वीरता पुरस्कार नहीं मिले।

११. आज कुछ कानून की आड़ मे, संविधान की दुहाई देकर, कोई वकील सुप्रीमकोर्ट में अर्जी देकर इस व्यवस्था को चेलैंज देकर कुछ फीस कमा रहा है, उसे नहीं मालूम सेना क्या है? उसे नहीं मालूम वह क्या करवाना चाहता है? उसे नहीं मालूम परिणाम की घातकता जब जयचन्द राठौर ने मुहम्मद गौरी को निमन्त्रण देकर भारत बुलाया तो उसे भी नही पता था कि पृथ्वीराज चौहान के बाद गौरी की तलवार तेरे गले का हार बनेगी। उसे यह भी नहीं मालूम था कि तेरे इस कदम का परिणाम भारत की जनता को ७५० वर्ष की गुलामी देगा। ईश्वर हमारे राजनेताओं, माननीय न्यायाधीशों तथा ऐसे वकीलों को सद्बुद्धि दे, यही प्रार्थना है।

१२. अन्त में लगभग ३५ वर्षों तक सेना में विभिन्न प्रदेशों के सैनिकों के साथ, जाति आधारहित रेजिमेंटों के साथ, १९६५ तथा १९७१ के भारत पाक मुद्दों से प्राप्त अनुभवों के आधार पर मैं यही कहूँगा कि ईश्वर के वास्ते, भारतीय जनता के वास्ते सेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के साथ Experiment मत कीजिए। भारतीय सेना विश्व की श्रेष्ठ सेनाओं में है, हम कभी नहीं हारे यदि १९६२ में हारे तो सेना नहीं तत्कालीन शासक हारे जिन्होंने शत्रु पर अन्धविश्वास कर सेना की घोर उपेक्षा की

अलम् इति विस्तरेण।

thearyasamaj.org

जलियाँवाला बाग का हत्याकाण्ड क्यों?

O नन्दलाल शास्त्री

प्रथमविश्युद्ध के समय में भारत के क्रान्तिकारी दलों ने बहुत जोर पकड़ लिया था। अतः उन्हें दबाने के उपायों पर विचार करने के लिए सरकार ने एक कमेटी नियुक्ति की जिसका अध्यक्ष रालेट को नियुक्त किया। इस कमेटी ने यह सिफारिश की, स्थायीरूप से ऐसे कानून बनाये जायें जिनसे न्यायालय में पेश किए बिना ही किसी व्यक्ति को नजरबन्द रखा जासके। (१९१८) की इस रिपोर्ट के अनुसार एक बिल भी भारत की विधानसभा में पेश किया गया जिसके कारण भारतीयों में बहुत क्षोभ उत्पन्न हुआ। महात्मा गांधी ने इन कानूनों का शान्तिमय रीति से उल्लंघन करने का आन्दोलन उठाया। ६ अप्रैल १९१९ के दिन सारे भारत में इन कानूनों के विरुद्ध प्रदर्शन किये गये। इस पर सरकार ने गिरफ्तारियां शुरू की जिससे जनता में बेचैनी फैल गई। जनता में अंग्रेजी शासन के प्रति रोष की जो भावना थी, वह जगह-जगह पर दंगों के रूप में प्रवृत्त हुई। पंजाब में अमृतसर, कसूर, गुजरांवाला, आदि अनेक स्थानों पर विद्रोह हुए और अनेक अंग्रेज अधिकारियों की हत्या की गई। इससे अंग्रेजी सरकार के क्रोध का ठिकाना न रहा। १३ अप्रैल के दिन अमृतसर के जलियानवाला बाग में एक शान्तिपूर्ण सभा होरही थी। जनरल डायर के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने इस सभा पर हमला कर दिया और निहत्थे तथा शान्त नरनारियों पर हमला करके गोलियों की बौछार शुरू कर दी। चार सौ के करीब मनुष्य जान से मारे गये और पन्द्रह सौ के लगभग घायल हुए। दो दिन बाद पंजाब में सैनिक शासन लागू कर दिया गया जिसमें अंग्रेजी सेना ने सर्वसाधारण जनता पर अमानुषिक अत्याचार किए।

पंजाब फ़ौजी शासन की अन्यायपूर्ण असहनीय चोटों के घावों से घायल हुआ पड़ा था। जलियांवाला बाग में सैकड़ों के भाई, पति और बालक डायर की गोलियों के शिकार हो गये थे। कितने ही घरों में मातम छाया हुआ था। अचिंतित आपत्ति के आतंक से प्रांत के लोग चोट खाने के बाद मुहँ से आह तक नहीं निकाल सकते थे। अत्याचारपूर्ण उस शासन की गरमी में जब ऊपर आकाश में स्वच्छन्द विचरने वाले परिन्दों के भी पर जलते थे, तब भूमि पर विचरने वाली निःशस्त्र एवं मूक प्रजा का तो कहना ही क्या था? स्वामी श्रद्धानन्द ने उस समय अमृतसर-क्रांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के आसन से दिये गये भाषण में मार्शल-लॉ के ख़ूनी शासन का रोमांचकारी चित्र खींचते हुए कहा था-"जिन हुकूमत के नशे में चूर मनुष्यों का जीवन ही स्वार्थ का स्वरूप हो, उनकी समझ में न सत्य का गौरव आ सकता है और न वे सत्याग्रह की शान को समझ सकते हैं। स्वार्थ का इन्द्रासन डांवाडोल हो गया। इस दुबले, बीमार, मुनहनी जिस्म केअन्दर वाले आत्मा के तेज को दुनियांदारी स्वार्थ न सहन कर सका। जिन बृटिश जनरलों और गम्भीर नीतिमान् ब्रिटिश शासकों ने एक तिहाई दुनियां को

thearyasamaj.org

जीत कर जर्मन-साम्राज्य की शक्ति खाक़ में मिला दी थी, उस के योद्धा इस नई शक्ति के उद्भव से दहल गये और उसी का नतीजा पंजाब का घोर उपद्रव है। अराजकता का राज हो गया, मनुष्य की जान का कुछ मूल्य न रहा, जेल-खाने भर दिये गये, बोलना अपराध हो गया, नंगे शरीरों पर कोड़े खाकर चिल्लाना पाप हो गया, इज्जदारों ने खाली इज्ज़त बचाने के लिए पुलिसरूपी यमदूतों के घर भर दिये और साध्वी सतियों के लिए अपने सतीत्व की रक्षा कठिन होगई। जलियांवाला बाग की घटना सामने लाओ और जनरल डायर के इस कथन को याद करो-'हां, मैं समझता हूं कि बिना गोली चलाये भी शायद मैं उनको मुन्तशिर कर सकता था।' इस पर प्रश्न हुआ कि फिर आप ने ऐसा ही क्यों न किया? उत्तर मिला-'वे लौटकर मेरी हंसी उड़ाते - मेरी हंसी उड़ाते और मैं बेवक़ूफ़ बनता।' शायद इसी मौक़े के लिए शायर ने कहा था- 'किसी की जान जाये आप की अदा ठहरी।' एक ब्रिटिश जनरल की शान पर सैंकड़ों युवा, बूढ़े और बालकों के सीस चढ़ जांय तो क्या परवा है, उस की शान में फ़रक़ न आना चाहिए। उन ग्यारह से पन्द्रह वर्ष की विधवाओं का चित्र अपने सामने लाइये, जिन के पति शूली पर चढ़े या भून डाले गये और जिन के उदासीन मुखों के दर्शन-मात्र ने मुझे, नेहरू जी और मालवीय जी को आठ-आठ आंसू रुलाया। एक युवक के नंगे शरीर पर बेतों की मार का हाल सुनाकर एक वृद्ध ऐसा रोया कि उसकी घिग्घी बंध गई। सिंह पुरुष चौधरी बुग्गा की वीर रमणी का एक गोरे के द्वारा खींच कर मकान से बाहर लाया जाना केवल एक ही घटना नहीं है। .... नियम के नाम पर विप्लव और शान्ति के नाम पर अत्याचार का राज्य फैल गया। मार्शल-लॉ ने नर-नारी, बाल-वृद्ध और युवा सब को बेजान कर दिया। वैशाख की पवित्र संक्रान्ति के दिन जो रक्त से भूमि लाल हुई, उस के श्रवणमात्र से सब के छक्के छूट गये। हां, उस दिन मार्शल-लॉ का विजय हुआ और शांति फैल गई, परन्तु वह श्मशान-भूमि और क़बरिस्तान की शान्ति थी-वह मौत की शांति थी।''

इस निर्लज्ज गोलीकांड के कारण लाशों से कुआं भर गया। बाग से बाहर निकलने का केवल एक छोटा-सा द्वार था, उसी द्वार पर मशीनगन लगा रक्खी थी। बाग की चार दीवारी बहुत ऊँची थी। सामान्यतया उस पर चढकर पार करना कठिन था। ऐसी अवस्था में डायर ने शान्ति से उत्सव में भाग लेती हुई निर्दोष जनता पर गोलियां बरसाई और सैंकडों लोग शहीद होगये।

ऐसे पापी अंग्रेजों की संस्कृति, भाषा, वेशभूषा, और खान-पान को आज भी भारतीय जनता अपनाए हुए है, यह घोर लज्जा की बात है। आज अंग्रेज सोचता है कि मेरी १८३५ में लागू की हुई योजना को मूर्ख भारतीय अभी तक हृदय से चिपकाये हुए हैं, उन्हें अपनी प्राचीन संस्कृति, सभ्यता, भाषा के प्रति लगाव नहीं है। इसलिए ये आज भी हमारे मानसिक दास हैं।

अंग्रेजों की क्रूरता को देखते हुए इनसे दूरी रखने में ही भारत का कल्याण है।

thearyasamaj.org

ओ३म्

९९ वर्षों से मानव सेवा में अहर्निश संलग्न आर्षपाठविधि का निःशुल्क शिक्षा एवं सुसंस्कारों से युक्त एकमात्र दिव्य मानव निर्माण केन्द्र व स्वामी ओमानन्द सरस्वती की कर्मभूमि

(महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से मान्यता प्राप्त)

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर

कक्षा 6 से 9 वीं तक प्रवेश प्रारम्भ

लिखित प्रवेश परीक्षा तिथि- 5 व 19 अप्रैल, 3 व 17 मई, 7 व 21 जून 2015
अर्थात् अप्रैल, मई, जून, के प्रथम व तीसरे रविवार को दोपहर 12 बजे होगी।

पहले आइये-योग्यता दिखाइये-प्रवेश पाइये-भविष्य बनाइये।

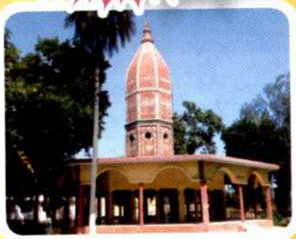

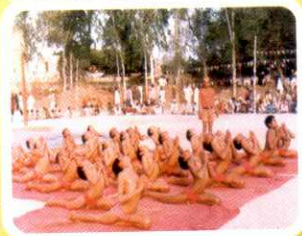

विशेषताएं

1. आदर्श दिनचर्या एंव कठोर अनुशासन
2. छात्रावास में रहना अनिवार्य
3. सुशिक्षित-सुयोग्य अध्यापक
4. विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास
5. मेधावी विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति
6. प्रतिदिन यज्ञ-योग, संध्या, आसन-प्रणायाम, व्यायाम
7. शुद्ध सात्विक एवं पौष्टिक भोजन व ताजा दुग्ध
8. उत्तम स्वास्थ्य हेतु विशेष चिकित्सा सुविधा
9. प्रदूषण एवं तनाव रहित खुला, प्राकृतिक वातावरण
10. हरियाणा सरकार द्वारा आवासीय कुश्ती नर्सरी
11. स्वावलम्बी संस्कारयुक्त व्यवस्थित जीवन
12. विस्तृत क्रीड़ा स्थल एवं सुयोग्य खेल प्रशिक्षक
13. नैतिक, चारित्रिक एवं आध्यात्मिक विकास
14. बीस हजार से अधिक पुस्तकों का विशाल पुस्तकालय
15. शुद्ध पेयजल हेतु RO, कम्प्यूटर, प्रोजक्टर एवं जनरेटर
16. भजन-भाषण, गायन-वादन का क्रियात्मक अभ्यास
17. ऐतिहासिक हरयाणा पुरातात्त्विक संग्रहालय

अतः संस्कारवान् दिव्य सन्तान निर्माण हेतू अपने बालकों को गुरुकुल में प्रवेश करवायें।

हम आपके बच्चे के उज्ज्वल भविष्य की शत-प्रतिशत गारण्टी लेते हैं।

अधिक जानकारी के लिए नियमावली (प्रोस्पेक्ट) कार्यालय से प्राप्त करें।

झज्जर शहर से तीन किलोमीटर, रेवाड़ी रोड पर पहला ही स्टैंड गुरुकुल का है।

E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

प्राचार्य
चाँदसिंह आर्य (9416126977)

कार्यालय
मो.: 9416661019, 9729192992

प्रधानाचार्य
आचार्य विजयपाल योगार्थी (9416055044)

Acharya Printng Press, Rohtak # 9254053111

thearyasamaj.org

हमारे प्रमुख प्रकाशन

१.	व्याकरणमहाभाष्यम् (५ जिल्द) (प्रदीप उद्योत, विमर्शसहित)	१०५०-००
२.	अष्टाध्यायी (पाणिनि)	१५-००
३.	कारिकाप्रकाश (सुदर्शनदेव)	२०-००
४.	लिङ्गानुशासनवृत्ति (सुदर्शनदेव)	१५-००
५.	फिट्सूत्रप्रदीप (सुदर्शनदेव)	१०-००
६.	छन्दःशास्त्रम् (व्रतिमंगलावृत्ति)	४५-००
७.	काव्यालकारसूत्राणि (व्रतिमंगलावृत्ति)	२५-००
८.	निरुक्त (हिन्दीभाष्य) (चन्द्रमणि)	२५०-००
९.	योगार्यभाष्य (आर्यमुनि)	२०-००
१०.	सांख्यार्यभाष्य (आर्यमुनि)	४०-००
११.	मीमांसार्यभाष्य (३ भाग)	२६०-००
१२.	वैशेषिकार्यभाष्य (आर्यमुनि)	६०-००
१३.	न्यायार्यभाष्य (आर्यमुनि)	१००-००
१४.	वेदान्तार्यभाष्य (आर्यमुनि)	१२०-००
१५.	महारानी सीता (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
१६.	अष्टाध्यायीप्रवचनम् (६ भाग)	६५०-००
१७.	छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम् (शिवशंकर)	२५०-००
१८.	वृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यम् (शिवशंकर)	१५०-००
१९.	उपनिषत्समुच्चय (पं० भीमसेन)	१००-००
२०.	ओरिजनल फिलासफी ऑफ योगा	२५०-००
२१.	मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प	३०-००
२२.	दयानन्दप्रकाश (स्वा० सत्यानन्द)	५०-००
२३.	धर्मनिर्णय (१-४ भाग)	८०-००
२४.	वैदिकविनय (१-३ भाग)	६०-००
२५.	देशभक्तों के बलिदान	१२५-००
२६.	सत्यार्थप्रकाश (दयानन्द)	२००-००
२७.	स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योगदान	४०-००
२८.	यजुर्वेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	१००-००
२९.	सामवेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	८०-००
३०.	अथर्ववेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	३५०-००
३१.	[illegible] संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	३५०-००
३२.	सा[illegible]वेद पदसंहिता	२५-००
३३.	[illegible] अभिनन्दन ग्रन्थ	१००-००
३४.	सुखी जीवन (सत्यव्रत)	३०-००
३५.	महापुरुषों के संग में (सत्यव्रत)	१५-००
३६.	घर का वैद्य (१-५ भाग)	१००-००
३७.	दैनंदिनी (सत्यव्रत)	२५-००
३८.	ब्रह्मचर्य के साधन (१-११ भाग)	६०-००
३९.	संस्कृतप्रबोध (आचार्य बलदेव)	२०-००
४०.	संस्कारविधि (स्वामी दयानन्द)	५०-००
४१.	स्वामी ओमानन्द ग्रन्थमाला (४ जिल्दों में)	१२००-००
४२.	दयानन्द लहरी (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
४३.	विरजानन्दचरितम् (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
४४.	रामायणार्यभाष्य (दो भाग)	३२०-००
४५.	महाभारतार्यभाष्य (दो भाग)	४५०-००
४६.	स्वामी ओमानन्द जीवन (वेदव्रत शास्त्री)	४००.००

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2014-16

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103
E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री ——————

स्थान ——————

डा० ——————

जिला ——————

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-वेदव्रत शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।